

अथ रसप्रबोधप्रारम्भः ॥

दोहा ॥

दोहामैंयहग्रन्थको कीन्ह्योंतिहिरसलीन ॥ अपने मनकीउक्तिसों रचिरचियुक्तिनवीन १ नवहूरसकोजब भयो यामेंबोधबनाय ॥ रसप्रबोधयाग्रन्थको नामध स्योतबल्याय २ सत्रहसैअट्ठानबे मधुसुदिछठिबुध बार ॥ बिलगराममेंआइकै भयोग्रन्थअवतार ३ बांचि आदि तेअन्तलौं यहसमुझैजोकोइ ॥ ताहिऔररसग्रं थकी फेरिचाहनहिंहोइ ४ कबिजनसोंरसलीनयह बि नतीकरतपुकारि ॥ भूलिनिहारिबिचारिकै दीजोताहि सवाँरि ५ ॥ अथ रसवर्णन । दोहा ॥ बरणमङ्गलाचरण अरु कबिकुलकोअबआनि ॥ रसकोवर्णनकरतहौं ग्र न्थमूलाजियजानि ६ ॥ अथ रसलक्षण ॥ श्रवणसुनतर सशब्दको ग्रन्थनदेख्योजाय ॥ रसलक्षणातिनकेमते समुझिपर्योयहआय ७ जबबिभावअनुभावअरु व्य भिचारीमिलिआनि ॥ परिपूरणव्यापीजहां उपजैसोर सजानि ८ ॥ अथ रसरूप ॥ जोथायीरसबीजबिधि मा

नसाचितक्षितिमाहिं ॥ ताकोअंकुरजोकछू सोथायीक
हिवाहिं ९ अवसररसमउपजावने सरसावतजलरूप॥
अलिबनउद्दीपनहियो जनविभावअनुरूप १० अन
भावहुतरुप्रकटकरि जानिलेहुयहबात ॥ व्यभिचारीहै
फूलसों क्षणक्षणफूलतजात ११ तिनसँयोगमकरन्द
लौं रसउपजतहैआनि॥ रसिकमधुपकबिचित्रकरि ता
हिकरैंपहिंचानि १२ ॥ अथ प्रथमभाव कहबेकोहेतुकथनं ॥
भावहितेरसहोतहै समुभिलेहिमनमाहिं ॥ यातेपाहिले
भावसब वर्णतसुकबिसराहिं १३ ॥ अथ भावलक्षण ॥
जोरसको अनुकूलह्वै बदलैसहजसुभाव ॥ बिनब
सिताकोभावकहि भाषतहैकबिराव १४ स्वईभाव
ग्रन्थनमते द्वैबिधिलीजैजान ॥ इकथायीअरुदूसरो
उद्दीपनमनमान १५ थायीहैमनभावसों रत्यादि
कनवगाइ ॥ तेनिजनिज रसमेंरहैं वैविरुद्धै ढरिजा
इ १६ व्यभिचारीतिनकोकहैं कोबिदबुद्धिअपार ॥
बहुरसकेसबरसनमेंजिनकोहोयसचार १७ नवथायी
सोमूलहैनवरसकेपहिंचान ॥ व्यभिचारिनकेकाजअब
देहोंसकलबखान १८ तिनव्यभिचारिनकोसुमति द्वैवि
धिकरतविवेक ॥ तनव्यभिचारीएकहैमनव्यभिचारीए
क १९ अष्टउवेदआदिकतेई तनव्याभिचारीजान॥ तें
तिसनिर्वेदादिसों मनव्याभिचारीमान २० तनव्यभिचा
रिनवाइन प्रकटैसोअनुभाव ॥ सहचारीथायीनके म
नव्यभिचारीगाव २१ नौथायीअरुआठतन व्याभिचा
रीपरकाश ॥ तेंतिसमनव्यभिचारियन मिलिहैंभावप

चाश २२॥ थायीभावलक्षण ॥ जबभावनमेंयहलख्यो
थायीहैरसमूल ॥ तबइनकोवर्णनकस्यो प्रथमहैअनुकू
ल २३ जोरससन्मुखह्वैकछू बदलैसहजसुभाव ॥ ति
नवदलनिकोकहतहैं कविजनथायीभाव २४ जारसस
न्मुखजोकछू तनकबदलाहियहोय ॥ तारसकोथायीवि
है यहवर्णतकविलोय २५ ॥ अथ थायीभावनाम ॥ रति
हासीअरुशोकपुनि क्रोधउछाहसुआनि ॥ भयघृणाअ
चरजसमुभिपुनि निर्वेदहिजियजानि २६ ॥ अथ बिभा
वलक्षण ॥ थायीकारणकोसुकवि कहतबिभावविशेख ॥
सोद्वैविधिआलम्बनरु उद्दीपनअविरेख २७ उपजैथा
यीजाहिलहि सोआलम्बनजान ॥ अधिकजाहितेहोत
सो उद्दीपनपाहिंचान २८ ॥ अथ अनुभावलक्षण ॥जोथा
यीकोआनिके प्रगटिकरैअन्यास ॥ सोईहैअनुभावय
ह बरणतबुद्धिनिवास २९ ॥ अथ विभावअनुभावव्यभिचा
रीथायी। भावकेभिन्न२रस ॥ रत्यादिकाथिरभावके कारण
जानविभाव ॥ कारजहैअनुभावअरु सहकारीचरभा
व ३० प्रगटतविरहविभावपुनि कछुप्रगटतअनुभाव ॥
अतिप्रगटतहैंआयपुनि तनअनुभवचरभाव ३१ था
यीकेयोंप्रगटते रसकहियतहैसोय ॥ ज्यहिस्वादनमेंभू
लिसब महामगनमनहोय ३२ सोरसाचित्तकवित्तमें क
विजनचित्रसमान ॥ जाहिलखतहीरीभिकै सोहत
रसिकसुजान ३३ याहीकोरसकहतहैं सोकविग्रन्थनि
ल्याइ॥ अपनेअपनेरूपमें नवविधिलिखिबनाइ ३४।
अथ नवरसनाम ॥ प्रथमाशिंगारसुहासरस करुणारौ

द्रहिजान ॥ बीररुभयबीभत्सकहि अद्भुतशांतबखान ३५ काव्यमतेयेरसनवो बरणतसुमतिविशेख ॥ नाटकमतरसआठहैं बिनाशांतअविरेख ३६ सोरस उपजततीनिबिधि कविजनकरतबखान ॥ कहुँदरश नकहुँश्रवणकहुँ सुमिरणतेपरमान ३७ ॥ तत्र शृङ्गार रस प्रथमकहबेकोहेतुकथन ॥ रसकोरूपबखानिपुनि बरणे नवरसनाम ॥ अबबरणतशृंगारको जाहीतेसबकाम ३८ तिहिशृंगारकोदेवता कृष्णलीजियेजानि ॥ औरबरणहू कृष्णहैं कृष्णबरणपहिचानि ३९ सोईदेवादिकनमें सबकोहौशिरताज ॥ यातेउनकोरसभयो सबनमाहिंरस राज ४० अरुव्यभिचारीसकलरस याहीमेंतेहोत ॥ याहूतेसबरसनमें यहरसराजउदोत ४१ ॥ अथ शृङ्गार रसमें आठहूरसव्यभिचारीकोउदाहरण ॥ मोहनलखियहस-बनते हैउदासदिनराति ॥ उमहतिहँसतिबकतिडरति बिगचतिबिलखिरिसाति ४२ जबनिकस्योसबरसनमें यहरसराजकहाय ॥ तबबरणयोयाकोकबिन सबते पहि-लेल्याय ४३ ॥ अथ शृङ्गाररसथायीरसकोलक्षण ॥ प्रियजन लखिसुनिजोकछू प्रीतिभावचितहोय ॥ हैरतिभावशृंगारको थायीजानौसोय ४४ ॥ अथ रतिथायीभावको उदाहरण ॥ तुवहितनवतरुनेहको उपज्योहरिहियआय ॥ सुरतिसलिलसींचतरहत सफलहोनकेचाय ४५ वे चिकनीबातियांरहीं तियहियज्योतिजगाय ॥ पूरणकरिये नेहलव अतिदीपतिसरसाय ४६ ॥ अथ शृङ्गाररसथायी रतिकेविभाववर्णन ॥ प्रथमेंकारजहोतहै कारणतेनितआ-

य ॥ यातेआदिबिभावको उचितबरणिबोल्याय ४७
रतिकारणजोकवितमें सोबिभावह्वैजान ॥ इकआलम्ब
नदूसरो उद्दीपनपाहिंचान ४८ यातेरतिअवलम्बई सो
आलम्बनहोय ॥ रतिकीदीपतिजाहिते उद्दीपनहैसो-
य ४९ सोआलम्बननायका अरुनायकजियजानि ॥
पियप्रतीतियातियाहिअति पियचितमेंयहआनि ५०
तिनमेंकहियेनायका मनमथबलआधीन ॥ यातेहित
चितलायकै तिहिबरणतरसलीन ५१ ॥ तत्र रसिक
प्रियायां। दोहा॥ बरणतनारिनिरनते लाजचौगुनीचित्त ॥
भूखाद्विगुणसाहसछगुण कामअठगुणोमित्त ५२ ॥ अथ
नायका लक्षण ॥ देखतहीज्यहिनारिके नरहियउपजै
प्रीति ॥ ताहिकहतहैंनायका जोजानतरसरीति ५३
अथ नायकामेंतीनिगुण वर्णन ॥ गौरीतुलितअनूपमन हर-
णिकमलारूप ॥ बाणीलौंअतिचतुरतिहि तियबरणतक
बिभूप५४॥अथ तिहूंगुणकेउदाहरण॥मुखशशिनिरखिचको
रअरुतनयानयलखिमीन ॥ पदपंकजदेखतभ्रमर होत
नयनरसलीन ५५ गिरिजाशिवतनमेंरही कमलाहरिहि
यपाय॥तूतनहरिपियहियबसी हियहरिप्राणनजाय ५६
सुरननिकारोसिंधुते रतनचतुर्दशजोइ ॥वेधामेधासिंधुते
एकैतुहींबिलोइ ५७ ॥ तत्र नायकाभेदक्रमते कथन ॥ प
तिहीसोंज्याहिप्रीतिसो स्वकियासलजसरीति ॥ परकी
यापरपुरुषसों धनकहिधनसोंप्रीति ५८॥ स्वकियायथा ॥
मनचिंताधनचषनते चिंत्यामनकीरीति॥ सखीशील
कुलकानिअरु प्रीतमआवतप्रीति ५९ धरातिनचौकी

नगजरी यातेउरमेंल्याइ॥ छांहपरेपरपुरुषकी जिनतिय धर्म्मनशाइ ६०॥ तत्र स्वकीयाभेद क्रमतेकथन ॥ मुग्धा जामेंपाइये यौबनआगमरीति ॥ मध्यामेंलज्जामदन प्रौढ़ामेंपतिप्रीति ६१ ॥ मुग्धा वर्णन ॥ चषचलिश्रवण मिल्योचहत कचबढ़िछुवनछवानि । कटिनिजदरवध स्योचहत वक्षस्थलमेंआनि ६२ जिनकोलक्षणनाम ते प्रकटहोतअनयास ॥ तिनकोलक्षणभिन्नकरि मैंन हिंकरतप्रकास ६३ ॥ तत्रमुग्धापंचभेदमध्य । प्रथमअंकु-रित यौबनावर्णन ॥ बिधिकिसानजोउरिउये बीजतरुण ताल्याइ ॥ सोऊअवसरलहिभये अबकछुअंकुरआइ ६४ योंबालायौबनझलक झलकतिउरमेंआइ । ज्यों प्रकटतमनकोबचन बिंबपुतारिनदरशाइ ६५ ॥ द्वितियभेदसेसबयौबना ॥ तियसेसबयौबनमिले भेदनजान्योजात ॥ प्रातसमयनिशिद्योसके दोउभावदरशात ६६ जो तियशिशुतामेंभयो यौबनआनिउदोत ॥ मीनराशिके भानुमेंज्योंनिशिसमादिनहोत ६७ ॥ तृतीयभेद नवयौ-बना ॥ ज्योंवयतिथिबाढ़तिकला यौबनशशिअधिका ति ॥ त्योंशिशुतानिशितिमिरघट छबिकरठेलतिजा ति ६८ उकसतहीतुवउरजअरु निकसतिलंकसुभाय॥ उकसनिकससबतियनके परीजियनमेंहाय ६९ ॥ नव यौबनाकेद्वैभेदमें प्रथमभेदअज्ञातयौबना ॥ वादिनबांधीसासु में होड़सखिनसोंलाइ ॥ वेईमेरेवियरवर उरमेंउससी आइ ७० धाइधाइलखिकौनयह भईबालतनपीर ॥ दुहूँओरउरजनधरे सेंकिसेंकिकैचीर ७१ ॥ द्वितियभेदज्ञात

यौबना ॥ सखीगुनातिजोतियगुणन रुचतकिबिहँसि
लजाति ॥ मानहुँकमलकलीनबिच अलीबिहँसिरहि
जाति ७२ तनसुवरणकेकेसतको लसतपूतरीश्याम ॥
मनोनगीनाफटिकमें जरीकसौटीकाम ७३ ॥ चतुर्थभेद
नवलअनङ्ग ॥ ताजनमदननमानहीं परेलाजबसिमाहिं॥
हठेतुरँगलौंतियनयन उचकतहूंरहिजाहिं ७४ ॥ नवल
अनङ्गाकेभेदताते प्रथमअविदितकाम ॥ भईव्याधऐसीकछू
छुटोखलकतेहेत ॥ द्यौसचारितेचांदनी मोचितकरति
अचेत ७५ ॥ नवलअनङ्गाकोभेद । द्वितियविदितकाम ॥
खेलतिहीगुड़ियाधरी गुड़वनसङ्गमिलाय ॥ निरखि
निरखिफिरिआपही दृगनरहीसकुचाय ७६ ॥ पंचमभे
दनवलबधू ॥ सौतिनमुखनिशिकमलभो पियचषभयेच
कोर ॥ गुरुजनमनसागरभये लखिदुलहिनिमुखओर
७७ तुवदीपतिकेबढ़तही हरिलीनोंमनपीय ॥ दृगखो
लेबोलेकहा अबहरिलिहौंजीय ७८ ॥ नवलबधूकेद्वैभेद।
तामें प्रथमनवोढ़ा ॥ हैनवोढ़पतिसङ्गजो सोवतिअधिक
डराय ॥ अरुबिश्रब्धनवोढ़जो पतिसोंकछुपतिया
य ७९ ॥ नवोढ़ायथा ॥ सखिनकहेचलआभरण नेकु
नपहिरतिबाम ॥ मनहींमनसकुचतिडरति भजातिला
लकोनाम ८० मोरमुकुटधरिएकसखि बधूदिखाईछांह॥
भगीपन्नगीलोंलपकि लगीधाइउरमांह ८१ ॥ बिश्रब्ध
नवोढ़ायथा ॥ यतनजोरतेनवलातिय योंपियपैठहिराय॥
औषधिबलतेअगिनिमें ज्योंपारोरहिजाय ८२ सौ
हैंआवतिभावती जबपियसोंहैंखात ॥ सुरतिबातसहिम

वातलहि सुखतमूलजलजात ८३ हँसतिहँसतिरतिवा
तलहि ज्योंरोईगहिनेह ॥ दमकिदमकिज्योंदामिनी पी
छेबरसैमेह ८४ तियअक्षनअरुज्ञानमधि प्रीतिनदे
तिजनाय॥यमुनगङ्गकेबीचमें ज्योंसरसुतिसरसाइ ८५॥
तीजोभेदनवलवधूमें। लज्जा आसक्त रतिकोबिदाको।लक्षण ॥
एकमतेविश्रब्धसो लाजपरारातिहोति ॥ सरसतिजिहिर
तिलाजते पियहिकामकीजोति ८६ मोहगखोलनको
ललां विनयकरीहियलाइ ॥ पैइननैननिनहिंलख्यो र
हीलाजमोंछाइ ८७ हौंरीझीवाबालको लखिचरित्रअ
भिराम ॥ जितीबढ़तिहैलाजतिय तितोबढ़तपियका
म ८८ ॥ मुग्धाकोमुखिबैठिबो ॥ नवलामुखिबैठनिचितै
यहसनहोतविचार ॥ कोमलमुखसहिनासकति पियचि
तवनिकोभार ८९ ॥ मुग्धाकोसैन ॥ सबनिशिजागीपि
यडरनि सोईमुखधरिहाथ ॥ प्रातहिशशिअरिकोगह्यो
द्वैकमलनिमिलिसाथ ९० ॥ मुग्धाकीसुरतारम्भ ॥ भाज
तिनवलायोंगही उरमाधिश्यामनिशङ्क ॥ जनुतरपति
हींबीजुरी धरीमेघनिजअङ्क ९१ ॥ मुग्धाकीसुरति ॥ र
तिराचतियोंनवलतिय नेकनहिंतूहिराइ ॥ ज्योंहरणी
व्याधागहे छूटनकोअकुलाइ ९२ योंनवलारतिमेंकरति
भांतिभांतिकिलकार ॥ ज्योंफेरतहींतारके फिरतजाति
सुरतार ९३ ॥ मुग्धाकोसुरतांत ॥ योंमींजतकोऊललां
अबलनअङ्गबनाइ ॥ मलेपुहुपकीवासलौं सांसनजानी
जाइ ९४ टपकावातिअँशुवाकुचन ओटकियेपटलाज ॥
आंलीशिवकेशीशइन यमुनबहाईआज ९५ ॥ मुग्धा

कोमान ॥ लखिनकहैरूसीतिया लखिपियकस्योविचार ॥
कंटगड्योंतबधनकह्यो आवतहमैंनिकार ९६ पियपर
तियकुचगहतलखि ललीचलीअनखाइ ॥ तबपियधाइ
लगाइमुख चूमिलियोउरलाइ ९७ ॥ इतिमुग्धाभेद ।
अथ मध्याभेदसमानलज्यामदना ॥ इतउतदोऊओरभुकि
आनिबीचठहराइ ॥ लाजमदनमेंधनरहे तुलाशूचिका
भाइ ९८ रमणीमनपावतनहीं लाजप्रीतिकोअन्त ॥
दुहूंओरऐंचोरहे ज्योंविवतियकोकन्त ९९ तियहिय
पलनकपाटगति निरखिलेहुदृगकोर ॥ खुलतप्रेमकोजो
रते मुंदतिनेमकेजोर १०० बिभकावतहीमदनके खि
चतिलाजगुनआइ ॥ बँधीकुरंगिनिलौंतिया उचकिउ
चकिमुरभाइ १०१ ॥ अथ मध्याकेचारिभेदमें प्रथमभेद ।
उन्नतयौवनामध्या ॥ लिखिविरंचिरास्योहुतो यहसँयोग
इकसंग ॥ कुचउतंगतियउरचढ़ै पियउरचढ़ैअनं
ग १०२ ॥ दूजोभेदउन्नतकाम ॥ योंतियनैननिलाजजो
लसतकामकेभाइ ॥ मिल्योसलिलमेंनेहज्यों ऊपरही
दरशाइ १०३ जोघटदीपकपूरिकै उमग्योनेहबनाइ ॥
सोवतबतियांतेतिया प्रगटचुवतहैआइ १०४ ॥ तीजो
भेदप्रगल्भवचना ॥ प्रगलभबचनानायका मध्याकोयह
भाइ ॥ जोरिसधुनिसोंआगरी रोकैपियहिबनाइ १०५
पियअविवेकीकामये नेकनमोहिंसुहाहिं ॥ प्रतिफूलन
केमधुपको ठौरहोतहियमाहिं १०६ ॥ चतुर्थभेदसुरतिबि
चित्र ॥ क्षणरतिक्षणविपरीतरचि पूरतिहियेअनंग ॥
टूटतहारअरुजुटतहै कूजतधुनिखगसंग १०७ अ

धरनिदरनासाउचै दृगनफेरिसितराइ ॥ ठुनकिठुनकि धनसुरतिखन पियमनहरतिबनाइ १०८॥ लघुलज्जाम ध्याल्क्षण ॥ लघुलज्जाहूइकमते मध्याबरणीजाय ॥ जामेंकलुयकआनिकै लाजलेशरहिजाय १०६॥ यथा ॥ होड़जीतिअकवारिकी खेलबीचतेटारि ॥ ललनरहेअँगियाचितै ललनादियानिहारि ११० लाजपाछिलीसंगतिन तियहियनितानियराइ ॥ प्रीतिनईहितकारनहिं लखिरिसाइफिरिजाइ १११॥ मध्याको सुरिबैठिबो ॥ पियलखिमुरिबैठतिनहीं करिघूंघटकोभाव ॥ चोरीकैमनलालको गोरीकरतिदुराव ११२॥ मध्याको सुरतारम्भ॥ रतिआरम्भनिहारजब झझकिबांहसतराति ॥ भूदृगनासाअधरसों कोटिभावकरिजाति ११३ बांहगहतसतराततब करझझकतिसुकुमारि ॥ चूरचूरमनकरतिहै चूरिनकीझनकारि ११४॥ मध्याकी सुरति ॥ क्षणकरहतिथिरुथकितह्वै क्षणहीमेंअकुलाइ ॥ रतिमानतिमनभावती ठनगनठानतिजाइ ११५ यौंरतिमेंसुकुमारके दृगउघरतमुंदिजात ॥ ज्योंतारेआकाशके झलकतदुरतप्रभात ११६ कानपरतमृगलौंपरे मुरछिललनकेप्रान॥ कंठठुनकनेवरभुनक दुहुनलईजबतान ११७ मध्याकी बिपरीत ॥ रमतिरमणबिपरीतयों लाजमदनमेंथाकि ॥ ज्योंरथहांकतसारथी दुहूंलीककोताकि ११८ ॥ मध्याकोसुरतांत ॥ बिगरेभूषणनहिंसजति धनबैठीपरयंक ॥ पियतनहेरतिअनखसों फेरिफेरिदृगबंक ११९ खिनमुकुरातिहैढीठह्वैखिनलचिहेरतिगात ॥

कौतुकलाग्योसखिनको पूछतिरतिकीबात १२० ॥ इति मध्याभेद २ ॥ अथ प्रौढ़ानिजपति अनुराग ॥ बीतेदिनडरलाजके अबआवतयहप्रान ॥ एकौपलनिजकंतको अंत नदीजैजान १२१ जबवनितावृषराशिमें यौवनरविदरशाइ ॥ मदनतपतप्रतिद्योसमें बढ़िलाजशीतघटिजाइ १२२ ॥ प्रौढ़ाके चारिभेदमें प्रथमभेद। उद्भटयौवना ॥ गजगमनीतुवगतिनिरखि रीझिरहींसबबाल ॥ कुचकुम्भनसोंपेलिके बशकरिलीनोंलाल १२३ ॥ दूजोभेदमदनमदमाती ॥ कुचपियहियहिलगाइतिय अंगमोरिअंगराइ ॥ उरजगहतअठिलाइके नैनमिलैमुसुकाइ १२४ तीजोभेद लुब्धाप्रतिप्रौढ़ा ॥ धनिस्वरूपअरुसुमतिको सरससबनतेजानि ॥ गुरुजनदुरजनईशसम शशिानवायेआनि १२५ ॥ चौथोभेद रतिकोविदाप्रौढ़ा ॥ विमलगंगसीधनरचीविधिअनंगरसदानि ॥ जाप्रसंगमेंपाइये सुखतरंगकीखानि १२६ रतिस्वरूपधरिअवतहै सिखैभारतीभाइ ॥ तऊरावरीसुरतिगुण केहूसकैनपाइ १२७ ॥ अपरद्वैभेद ॥ रतिप्रियाअनंदातिसंमोहाप्रौढ़ा ॥ येदोऊप्रौढ़ानको कबिवरणतयहजानि ॥ इनहूंकोवरणनकियो उदाहरणमेंआनि १२८ ॥ रतिप्रियायथा ॥ पियतरहतपियअधरनित भूखप्यासबिसराय ॥ चखैनऊखमयूखवहवापियूखकोपाय १२९ लालरङ्गमेंपगिरही बहियतगीइकखान ॥ सदासुहागिनिफूलसी सदादामिनिजजान १३० ॥ अनंदातिसंमोहा ॥ गहतबांहपियकेअली छुटोकम्पतनआइ ॥ भजीदृगनतेलाजसुधि हियतेगईबिलाइ १३१ ललन

गहतसुखतेगयो मोहनींदलौछाइ ॥ मारकरनकीसुधि
अली जगीभोरहीआइ १३२ ॥ प्रौढ़ाकोमुरिबैठिबो ॥ पिय
चितवततियमुरिगई कुलहितपटमुखलाइ ॥ अमीच
कोरनकेपियत घनलीनोशशिछाइ १३३ ॥ अथ प्रौढ़ा
कोसुरतारम्भ ॥ बांहगहतसीवीकरति कुचपरसतसतरा
इ ॥ पियनिजमहतबढ़ाइकै रुचिउपजावतिजाइ १३४
प्रौढ़ाकीसुरति ॥ आलिङ्गनचुम्बनकरत कोककलिनके
घात ॥ दम्पतिरतिरसलेतमैं कहूंननेकअघात १३५
यौंउरलागतिसेजते बामश्यामगहिबांह ॥ ज्योंबिजुरी
घनश्वेतकी दुरैअसितघनमांह १३६ ललनमुकुतिटूट
तपरे बालहाथकुचआइ ॥ बूंदबचायोशिवमनो सरसी
रुहशिरलाइ १३७ ॥ प्रौढ़ाकीविपरीत ॥ टीकाछुटिविप
रीतखन पर्योउरोजनआइ ॥ हाथचलायोशशिमनो
कमलकलीअरिपाइ १३८ छिनकलेतिहैसुरतिमुख
छिनराचातिविपरीति ॥ अधऊरधपलटततरहै बिचकौ
तुककीरीति १३९ ॥ प्रौढ़ाकोसुरतांत ॥ ढुरकिपरीकि
हिउरबसीनखकुचशीशसुहाइ ॥तरुणछप्योमनुशिराशि
खर द्वैजकलादरशाइ १४० जेअभरणसाजेहुते करि
बेकोरसरङ्ग ॥ तिनतेअतिछबिदेतहै स्वेदबूंदतुवअङ्ग
१४१ ॥ इतिप्रौढ़ा ॥ अथ पतिदुखितावर्णनं ॥ इनभेदनमें
जोकोऊ रसभासाविख्यात ॥ मुग्धाकुलटाहूबिषे सो
गुणपायोजात १४२ ॥ मूढ़पतिदुखिता ॥ अतिमीठेअ
रुरसभरे लालरसालसुभाइ ॥ तनिककचाईकाठिनई
प्रकटकरातिहैआइ १४३ ललितसलोनेललनपै त

जिगुरुजनकीआन ॥ गरेलगतिहैआइज्यों नेहप्रकोप
कवान १४४॥ बालपतिदुखिता ॥ बारेपियकेहाथतिय रा
खतिकुचपैलाइ॥ कमलनपूजतशिवमनो बलीमदनको
पाइ १४५॥ वृद्धपतिदुखिता॥ धरतिनधीरजकामते वृद्ध
नाहको पाय ॥ बालश्वेतअवलोकिमुख बालश्वेतह्वै
जाय १४६॥ अथ मुग्धातेधीरादिभेदनिवारिबोकथन॥ मुग्धा
मेंजोमानको बरणतहैंकबिल्याइ॥ सोविश्रब्धनवोढ़में
कछुयकपायोजाइ १४७ मानहेतधीरादिको यहजानत
सबकोय॥ पैमुग्धामेंकैसहूँधीरादिकनाहिंहोय १४८ धी-
रादिकमेंमूलहै ब्यंग्यादिककीटेक ॥ सोमुग्धामेंहोत
नहिं ब्यंग्याब्यंग्याविवेक १४९॥ धीराखंडिताकोविवेकप्रसंग
पायकथन ॥ मानहेतधीरादिअरु खंडितहूकोजान ॥
तिनदोनहुकेभेदमें यहकबिकरैंबखान १५० लघुमद्धिम
गुरुमानको सुवहेतनकोपाइ॥ धीरादिककेभेदसों होत
तियनमेंआइ १५१ हेतखंडिताकोकहै सुगतिचीनही
जान ॥ तहांमिटैगुरुमानाहित धीरादिकहूँआन १५२
पुनिधीरादिकभेदमें मिलैखंडितासाथ ॥ सोयहमधिम
अधीरहै यहजानतबुधिनाथ १५३ यातेकोपितदुहुनमें
भेदधरतनहिंआन॥ कोउधरैयहभांतिसों भिनभिनसोइ
बखान १५४ चिह्नहेतगुरुमानके तेद्वैविधिजियजान॥
इकसाधारणदुतियजिय असाधारनहिंमान १५५ नि-
श्चयरतिप्रकटैनहीं सोसाधारणजोय ॥ चिह्नअसाधा-
रणसुतो रतिपरकटकरिहोय १५६ पागछुटीदृगअरुणई
अलसानादिकभेद ॥ येसाधारणचिह्नहैं जानिलेहु

बिनुखेद १५७ दृगनपीकग्रंजनग्रधर नखरेखादिक
ग्रौर ॥ चिह्नग्रसाधारणविषे बरणतकबिशिरमौर १५८
सोइनद्वैबिधिचिह्नसे धरेग्रानियहटेक ॥ धीरादिकयह
खंडिता जातेलहैविवेक १५९ साधारणचिह्नधरै हेत
व्यंग्यकोपाय ॥ केवलधीरादिकविषे यहमनसमुझिब-
नाय १६० चिह्नग्रसाधारणसुतो जानखंडिताहेत ॥
खंडितहीमेंधरतहैं जेकबिबुद्धिनिकेत १६१ जोकोउयह
परमानकी साखीचहैबनाइ ॥ सोदेखैरसमंजरी उदा
हरणकोजाइ १६२ ॥ ग्रथमध्याप्रौढ़ाधीराभेदवर्णनं ॥ मान
भेदतेतीनविधि मध्याप्रौढ़ाहोइ ॥ धीराग्रौरग्रधीरति
य धीराधीराजोइ १६३ कोपकरैजोव्यंग्यविधि सोधी
राजियजान ॥ जोरिसकैग्रव्यंग्यसों सोग्रधीरपाहिंचा
न १६४ व्यंग्यग्रव्यंग्यदोऊबिषे कोपेधीरग्रधीर ॥ म
ध्याप्रौढ़ादुहुनमें यहवरणतकविधीर १६५ ॥ ग्रथ मध्या
धीरादिकलक्षणं ॥ व्यंग्यवचनधीराकहै प्रकटरिसाइग्र
धीर ॥ मध्याधीराधीरसों रोइजनावैपीर १६६ ॥ ग्रथ धीरा
दिभेदसाधारणसुरतिचिह्नकेउदाहरण रसमंजरीमतेमध्याधीराय
था ॥ चलितग्रलिनयुतकुंजापिय स्वेदचल्योजोगात ॥ तिह
सुखवतिहौंबातमें लैनलिनीकोपात १६७ तुमग्रवसेरत
मोदृगन गईनींदजोहिराइ ॥ सोईलाललागीसनोदृगन
तिहारेग्राइ १६८ शिथिलगातपियरोवदन ग्रंगग्रंग
ग्रलसात ॥ कौनबालसोंलालतुमलरिग्रायेहौप्रात १६९
मध्याग्रधीरायथा ॥ कहूँठगेकतहूँखँगे ग्रतिसगबगेस
नेह ॥ लाजपगेदृगरगमगे जगेकौनकेगेह १७० ला

लएकदृगआग्निते जारिदियोशिवमैन ॥ करिल्यायेमो दहनको तुमहैपावकनैन १७१ यहीबड़ाईतुमलखी मेरेढिगठहिराइ ॥ हाथपरतहौऔरके पांयपरतमोआ इ १७२ रीतसंयोगीबरणकी राखतहौशिरमोर ॥ गुरु ताईदेऔरको मिलेरहतमोओर १७३ ॥ मध्याधीराअधीरायथा ॥ निशिबिछुरीकछुबचनकहि योंरोईलखिकंत ॥ औटिऔटिउफनायज्यों क्षीरचुवतहैअंत १७४ कतन बोलियतललनके योंपूछतगहिहाथ ॥ धनिअँशुवाघन बूँदलौं झरेबातकेसाथ १७५ ॥ अथ मध्याधीराअधीरा॥ आकृतगोपनासादराबर्णनं ॥ आकृतगोपनसादरनि जानि जमतिकेतंत ॥मध्याधीरअधीरकोप्रौढ़ाधीरकहंत १७६ रीतसुब्यंग्याब्यंग्यकी यामेंपाईजाति ॥ मध्याधीरअधी रयह यातेसुभटहेराति १७७ ॥मध्याधीरअधीर आकृत गोपनायथा ॥ पियविनवततूसुनतनहिं दियेतूलमेंकान॥ लालऔरहेरतनक्यों दृगदुखदेतिनिदान १७८ ॥ मध्या धीराअधीरासादरा ॥ जेकहियतआदरबचन मधुरचीकने लाइ ॥ बिषकीशंकप्रकटकरत सहतधीवइकभाइ १७९ प्रौढ़ाधीरादिरुलक्षण ॥ धीरारिसरतिखिनकरै हनैअधी- ररिसाइ ॥ प्रौढ़ाधीरअधीररिसगोपहनैअनुखाइ १८० प्रौढ़ाधीरायथा ॥ पियआवतआदराकियो बोलीकछुमुसुका इ ॥ तनिककंचुकीगहतधन तानीभौंहबनाइ १८१ दुरी गांठिजोबालहिय लखीनकेहूनाथ ॥ प्रकटबालमाधिगां ठिलौ भईगहतहीहाथ १८२ ॥ प्रौढ़ाअधीरायथा ॥ पागदुरी पीरीखरी पियमुखपरीनिहारि ॥ फूलछरीकरमेंधरी अन

खभरीझकझकारि १८३ हहामहाकरनारितेयोंछुटिलाग्यो नाह॥ मनचंदनकेडारिते अहितमालतरुमाह १८४॥ प्रौढाधीराअधीरायथा ॥ नैनलालतकिरिसभरी कळूनबोलीबाल॥ बांहगहतहीउरहनीतनीतोरिकैमाल १८५॥ अथ ज्येष्ठाकनिष्ठा लक्षण ॥ जाहिकहतपियप्यारअति ताहिज्येष्ठानाम ॥ जापरकछुघटिप्यारहै सोकनिष्ठकाबाम १८६ ॥ यथा ॥ किनाविचित्रयहखेलबलि दीन्ह्योतुम्हैं बताइ ॥ मूठिडारिवाकेदृगन मोमुखमाड़तधाइ १८७ अधिकठगीहौंरावरी लखिचतुराईनाथ ॥ यकदिखाइ शशिएककै हियेधरतहौहाथ १८८ ॥ ज्येष्ठाकनिष्ठाकेभेदमें। धीरादिकथनं ॥ धीरतुआदिकभेदजे षटवरणेकविजान ॥ ज्येष्ठकनिष्ठप्रकारते द्वादशहोतनिदान १८९ मुग्धाकेद्वैभेदइन द्वादशभेदानिशङ्क ॥ तेरहविधिस्वकियानको वरणतबुद्धिउतङ्ग १९० ॥ स्वकीयापतिव्रताभेदकथनम ॥ स्वकियाऔरपतिव्रता मेंयहभेदविचारि ॥ वहसनेहयहभगतिसों सेवतिहैनिरधारि १९१ ॥ इतिस्वकीयाभेद ॥ अथ परपुरुषानुरागापरकीयाउदाहरण ॥ निजद्युतिदेहदिखाइकै हरैऔरकेप्रान ॥ नेहचहतिनिशिदिनरहै सुन्दरिदीपसमान १९२ ॥ परकीयाउभैभेदऊढाअनूढा ॥ ऊढाब्याहीऔरसों करैऔरसोंप्रीति ॥ बिनुब्याहीपरपुरुषरतियहैअनूढारीति १९३ ॥ ऊढायथा ॥ निजपतिलागतकुंजअरु उपपतिलागतखंज ॥ नैनअचलचलमंजुतिय दोऊविधिमनरंज १९४ सासुखड़ीडाटतिरहै नँनदीजुदीरिसाइ ॥ नेहलगतहरिसोंसबै रूखी

भईबनाइ १९५ ॥ अनूढ़ायथा ॥ रूखेहोतहुवासलौं चोरीदेतिजनाइ ॥ बिनाबढ़ेशिरनेहजो नेहचढ़्योशिर आइ १९६ ब्याहसुनतिउरदाहते खरीहोतिबेहाल ॥ नेहदहीहैल्याइकै नेहदहीमेंबाल १९७ लरिकाईसबते भली जामेंफिराहिंनिशंक ॥ ब्याहेपतिपर्यंकदुख अरुक लंकअकलंक १९८॥ द्वितीयभेद असाध्यापरकीयालक्षणं ॥ पुनपरकीयाउभयविधि वरणतहैंकबिलोइ ॥ एकअसाध्यादूसरी सुखसाध्याजियजोइ १९९ प्रेमलगैनहिंमिलिसकै सोईअसाध्याजानि ॥ चहैंमिलनजोसहजहीं तियसुखसाध्यामानि २०० बुधिबलमनकीलागको प्रगटदोषबहिराइ ॥ परकीयाहियमेंधरै असाध्यादिको ल्याइ २०१ कोऊअसाध्यादिकनको बरणततीनिप्रकार ॥ प्रथमअसाध्यदुसाध्यअरु सुखसाध्यानिरधार २०२ बहुरिअसाध्यदुसाध्यहै धरमसमीलाआदि ॥ वृद्धिबधूआदिककहै सुखसाध्याकबिवादि २०३ ॥ असाध्यापरकीया प्रथमभेद सभीताअसाध्या ॥ अधरधरैकितयै नहो अपनोधर्मगंवाइ ॥ बंशीलौंतजिबंशको मोहन मिलिहौंजाइ २०४ ॥ द्वितीयभेदगुरुजनसभीताअसाध्या ॥ श्याममधुपानिशिदिनबसै हियेतामरसमाहिं ॥ गुरुजन उरदुरजनभये देखनदेखनछाहिं २०५ ॥ तृतीयभेददूतीबरजिता असाध्या ॥ जोनिजहियहूंसोकहत मोजियखरोडराइ ॥ सोअंतरदुखऔरसों कहोकवनविधिजाइ २०६ ॥ चतुर्थभेद अतिकांताअसाध्या ॥ सजलश्याम निशिश्याममैं सेतजोनिमैंबाल ॥ दुहुपटघनमैंतनतं

ड़ित केहूदुरतिनलाल २०७ ॥ पंचमभेद खलप्रष्ठग्रसा
ध्या ॥ समुझिबोलियेवाहयह खरेचवाईगांव ॥ ना
उंलेतहरिकोश्रली हरमैंदीजतपांव २०८ ॥ सुखसाध्या
मधि प्रथमभेद वृद्धबधूसुखसाध्या ॥ वृद्धकामिनीकामते सू
नधाममेंपाइ ॥ नेवरझनकावतफिरै देवरकेढिगजा
इ २०९ ॥ दूजोभेद बालबधूसुखसाध्या ॥ जोछतियांबा
रेललै नहिंपरसोकरलाइ ॥ चहतिपरोसी हाथतेखरी
मसोसीजाइ २१० ॥ तीजोभेद नपुंसकबधू सुखसाध्या ॥
तुमसांचोविररतिकते सुखउपजैजोहिश्राइ ॥ नामहेतफ
लमांगिये पतिदेवतनमनाइ ॥ २११ चौथोभेद विधवा
बधू सुखसाध्या ॥ श्रोपभरीनिजरूपछबि देखतदरपन
मांह ॥ रोइनाहकेकामके हाथगहाईबांह २१२ कहाभ
येनखलौंतजे सबशिंगारजोबाम ॥ तुवतनत्रसातिननेक
हूं मनहरिबेकोकाम २१३ ॥ पंचमभेद गुणीबधूसुखसाध्या ॥
बांकीताननगाइके टांकीसीहियदेइ ॥ ढांकीछतियांकोक
छू झांकीदैजियलेइ २१४ गावतहैसुरतालमों नागरि
ढोलबजाइ ॥ श्रुतिधारनकेमनरही तारनमाहिंनचा
इ २१५ ॥ श्रष्टमभेद गुणरिझवती सुखसाध्या ॥ होतरागब
शएकयह सबजगजानतऐन ॥ येरागहुबशिकरतिहै उ
लटिऐनतियनैन २१६ ॥ यारमणीकीबातकछु मनसम
झानहिंजाइ ॥ रीझरहीहैबीनसुनि कैपरबीनरिझा
इ २१७ ॥ सप्तमभेद सेवकबधू सुखसाध्या ॥ बिकलहोनन
हिंदेहुंगी श्रपनेप्रभुकोजीय ॥ दिनसेवाकरिपीयप
गनिशिसेवाकरितीय २१८ ॥ निरांकुशसुखसाध्या ॥

योबनवंतीजोनडरुपियकोमानैनेक ॥ औरतियाछलछं
दपढ़ि गावैतानअनेक २१९ देवनपूजनजाहिअरुकर
हिबनहिकीसैल ॥ औनिरअंकुशनारिजो फिरैतियन
कीगैल २२० जिहिंपियअटक्योऔरसों अतिरोगीकी
नारि ॥ औरदूसरीबामयह सुखसाध्यानिरधारि२२१॥
द्वैभेदपरकीयाके औ१ ॥ नामलक्षण कथनं ॥ ऊढ़अनूढ़ादु
हुनमेंयेद्वैभेदबिचारि ॥ पहिलेअदभूताबहुरिउदभूदि
तानिहारि २२२ मिलनपेचअपनेकरै अदभूताातेहि
जान ॥ जोनायकपेचनमिलै उदभूदिताबखान २२३ ॥
अदभूतायथा ॥ येतेहैंरंगलालते करैनकोऊपाइ ॥ बिनु
प्रीतमवरवराणिनहिं इनआंखिनकीजाइ २२४ ॥ नायका
स्वयंदूती ॥ मोअंगियातनतकिरहे क्योंहरिडीठलगाइ ॥
जोनीकोहैतौतुम्हें देहौंआजुपठाइ २२५ सुधिनलेति
याबागकी मालीहूरिसमानि ॥ बनमालीक्योंथँभिरहे कृ
पाकीजियेआनि २२६ ॥ उदभूदितायथा ॥ दीपकलौं
झाँपतिहुती ललनहोतियहबात ॥ ताहिचलतअबफू
ललौं बिगसनलाग्योगात २२७ ॥ अवस्थाकेभेदते षट
विधि ॥ परकीयाकथन ॥ उदभूतादिकदुहुनमें येगुप्तादिक
जानि ॥ तेसबषटबिधिहोतहैं यहकबिकरतबखान २२८
गुप्तसुरतिगोपनकरै भयोहोइगोहोत ॥ करैबिदग्धा
चतुरई निजक्रमसाँझउदोत २२९ जाकोहितपरपुरुष
सों प्रकटहोत अनयास ॥ वहैलक्षितासोत्रिविध हैस
सुरतिपरकास २३० कुलटाताकोजानिये जोचाहैबहु
मित्त ॥ इच्छाबातभयेमुदित मुदिताकोयहचित्त २३१

बिनशैठौरसंकेतकैअरुसंकेतसंदेह ॥ जायनसमयसंके
ततिहि दुखअनसैनायेह २३२॥ प्रथम भेदवर्त्तमान सु-
रतिगोपना भूयथा ॥ अलिहोगुंजनाहितगई कुंजनपुंजन
आजु ॥ कंटअटेबस्तरफटे अंगकटेबिनुकाजु २३३ ॥
प्रत्यक्षमानसुरतिगोपना भुवियथा ॥ हौंनजाउंगीकैसहूं फूल
लेनकोबाग ॥ मरनहोइगोगातयह लागेपुहुपपराग
२३४ ॥ भविभरत वर्तमान सुरतिगोपनायथा ॥ जिहिगुं
जनतोरनिपरी येखरोटतनपाइ ॥ कहाकरौंअबल्याइहौं
फिरितेरेहितजाइ २३५॥ वर्तमान सुरतिगोपनायथा ॥येयह
ढोटाकौनको मेरोमहीचुराइ ॥ मुहँसुधाइकैआपनोसाह
भयोहैजाइ२३६ बड़ोअनोखोछोहरोदेखोरीयहआनि ॥
मेरीनीबीपीतजिनतोरीगेंदाजानि २३७ क्षैअचेतयाखेत
मेंगईहुतीबौराइ ॥ प्रेतजानिइनहेतकै झाख्योमोहिंबना-
इ २३८ लखतिकहाहौंसोनहीं करिकाहूसोंप्रीति ॥ उदर
लगावतनेहमिसि रचिराख्योबिपरीति २३९॥ तृतीयभेद
बिदग्धातामेंस्वयंदूतीबचनबिदग्धाबिवेककथनं ॥ घरहैबचन
विदग्धअरु स्वयंदूतिकोएक ॥ यातेहैइनदुहुनमेंकरबो
कठिनबिवेक २४० यहीबातकोसमुझिकै कविअपने
मनमाहिं ॥ जोराखतहैएकको दूजीराखतनाहिं २४१
जोराख्योहैदुहुनकोतिनकरियहैबिचार ॥ इनदुनहुन
केभेदमें यहकीनोविस्तार २४२ जोतियसनैसँकेत
की करैमतिकोकोइ ॥ काहूकोदैबीचतौबचनाविदग्धा
होइ २४३ करैसैनसंकेतवा रचैजाइजोप्रीति ॥
बिनअंतरतियपुरुषसों स्वयंदूतिकारीति २४४ क्रिय

विदग्धअरुबोधको याहीबिधिमिलिजात ॥ तिनदोनों
केभेदमें जानिलेहुयहबात २४५ क्रियविदग्धकरिचतु-
रई करैआपनोकाम ॥ सैनबुझावैकरिक्रिया सोबोधक
अभिराम २४६ ॥ विदग्धामेंबचनविदग्धायथा ॥ ऐसैंगिया
करिराखियो सकलरंगकोसाज ॥ सांझपरेहोआयहौं
श्यामबसनकोआज २४७ श्यामवारपगपरतसुन बाम
कह्योमुसुकाइ ॥ लगोननेहलुटायहो निशिलौंनेहसुखा
इ २४८ ॥ क्रियाविदग्धायथा ॥ थकितभईहौंहालही
लखिचरित्रयेबाल ॥ डारिउरबसीलालकी लखैउरब
सीलाल २४९ खिनखिनघटकाकाढ़ियत मुरिमुरि
लखिलखिनाहिं ॥ कूपसलिलघटसेभरै कूपसलिलघ
टमाहिं २५० ॥ क्रियाविदग्धापतिबंचितायथा ॥ पतिदेख
तहीहोयजो उपपतिकेरसलीन ॥ ताहिकहतपतिबंचि
ता जेपण्डितपरबीन २५१॥ यथा॥ रोगठानिकैढीठतिय
निपुणबैद्यकरिपीठ ॥ बैठीपतिसोंपीठदै जोरिपीठसों
दीठ २५२॥ क्रियाविदग्धामेंदूतीबंचिता ॥दूतीसोंसवतूति
करि मिलैनताहिजताइ॥ यथा ॥ दूतीछलिजोआयतू
मोसँगलायोनेह ॥ तुवअछेहपनआनकै कियोहियेमेंगे
ह२५३ ज्ञानिनकीमतितेभई बूढ़िनकीमतिनीच॥बीच
पाइकैमोहिंइन मोसोंपायोबीच २५४ ॥ तीजोभेदमेंलक्षि
तातासोंहेतुलक्षिता ॥ तहिंउठिचितवतहीजबैहरिदीन्ह्यों
मुसकाइ॥तूकतरदनधरेअधरदीजैमोहिंबताइ २५५॥
सुरतिलक्षितायथा ॥ कोहैमालीचतुरजो सरससींचिरस
जाल ॥ याकञ्चनकीबेलमें मुक्तलगायेलाल २५६

कौनमहावतजोरसों बशकरिबेकीचाइ ॥ तुवयोबनगज कुम्भपैअंकुशदीनोआइ २५७ ॥ प्रकाशलक्षितायथा ॥ प्रकटभईतुवरूपकीनेहलगतहीजोति ॥ सबजगजानत नेहते बालनशोभाहोति २५८ ॥ प्रकाशलक्षितादुतीयमते ॥ जेहिकारोपटपीयरो सोमेरेमनमाहिं ॥ आवतिलोगन केबदन कारीपीरीछाहिं २५९ ॥ चौथोभेदकुलटायथा ॥ बिधिसुनारअद्भुतगढ़ी तियकीसुबरनदेह ॥ जेहिअनेक जगजटनके तुलितएकहीगेह २६० पतिसमानसबजग बसै कामवतीजगमाहिं ॥ ज्योंमुदाजशिलमेंसबै होत मोरकीछाहिं २६१ ॥ पंचमभेदमुदितायथा ॥ कालिनन्द घरकाजहै जैहैंसबमिलिप्रात ॥ चलतबातयहफूलमो फूललग्योसबगात २६२ बधूरहैघरहमचलैं चलतबा तरसलीन॥भरकीकदलीपत्रलों तियकंचुकीनवीन२६३ षष्टमभेदअनुसैनामध्यप्रथमभेदस्थानविघटना यथा ॥ बन बीततबीत्योजुकछु कह्योजातसुनहाल ॥ ऊखहिउखरत निपटहीं सूखिगयोमुखबाल २६४ पावसदेनशरापअ लि पतिऊपरपतिसोइ ॥ दीबोकौनबसंतको जोदीनो पतिखोइ २६५ ॥ दूजोभेदभावस्थानशोचनयथा ॥ करि उजारनैहरचली शोचतकौनसुभाइ ॥ देउँजाइससुरारि के ऊजरगेहबसाइ २६६ फूलमूलमोकरचितै तूकत भईउदास ॥ कहाभयोवासासुरे जोफुलवारीपास २६७॥ तीजोभेदअनुसयनातामेंप्रथमभेद स्वैनधिष्ठितसंकेतस्थलरचनानु गवनअनुसयनायथा ॥ तीजोअनुसयनाविषे प्रथमभेदयह गाइ ॥ मीतगयोसंकेतते तियसकतनतहँजाइ २६८॥

यथा ॥ गुहतमालनँदलालजिहि कालसुनेवनजात ॥ मदनज्वालकीज्वालसों छयोबालकोगात २६९ बंसी लोमनमीनको खींचतबंशीटेरि ॥ निकसिचलनकोधाम ते बामनपावतफेरि २७० ॥ द्वितीयभेदअस्थानधिष्ठज्ञसंकेत वर्णवनुगवननष्टमानाअनुसयना ॥ पुनिअनुसयनातृतियमें भेददूसरोआइ ॥ जोपियपाससंकेतको चिह्नलखेपछि ताइ २७१ घरीटरीनटरीकहूँ शोचनभरीविशेखि ॥ परीछरीसीह्वैरही हरीछरीकरदेखि २७२ फूलछरीसंके तकी मोहनकरमेंपाय ॥ अवसरचूकेडोमिनी त्योंरमनी पछिताय २७३ ॥ पयमनोरथा ॥ नैनचहैसुखदेखियेमनसों कछूदुराइ ॥ मनचाहतदृगमूंदिकैलीजैहियेलगाइ २७४ प्रक्रियाकोसुरतारम्भ ॥ मोकरदोऊभरिदिये मनचीते फलआजु ॥ अलपवृक्षकोछांहइन कियेकल्पतरुका जु २७५ नैनमिलतमुखमेंबसी मुखबोलतहियआइ ॥ हियलावतकछुसुधिनहीं कितगइलाजभगाइ २७६ ॥ परकीयाकोसुरतांत ॥ योंसंकेतसुखलेतहरि पियआतुरगर लाइ ॥ ज्योंचोरीगुरपायकै तुरतलीजियेखाइ २७७ ॥ राधातनफूलनमिलो यातनहरिकोगात ॥ नूपुरधुनि खगधुनिमिली भलेबनेसबसात २७८ ॥ परकीयाको सुरतांत ॥ फूलमालसीबालजो मैंल्याईउभराइ ॥ ऐसी अंगलगाइसो कतडारीकुंभिलाइ २७९ पटभारतिपों छतिबदन मुदरीदरपनहेरि ॥ दूतीसोंअनखातिहै लाज वतीदृगफेरि २८० सबजगहार्योपैअलख काहूकोन लखात ॥ कुंजनमेंरतिकैदोऊ पँछीलोउड़िजात २८१ ॥

स्वकीयापरकीयासधिबंकानेमकथनं ॥ स्वकियापरकीयादोऊ बिनानेमपरमान ॥ कामवतीअनुरागिनी प्रेमअसकता जान २८२ ॥ कामवतीउदाहरण ॥ कतमोकरलावतकु चन कतगहियतलपटाय ॥ आलीचोटओसके कैसे प्यासबुझाय २८३ ॥ अनुरागिनीउदाहरण ॥ पियकुंडल कोचिह्नजो पस्योबालकीबांह ॥ खिनचूमतखिनलखि रहत खिनलावतउरमांह २८४ नाइनाइजिहिचखनमें मदपियादियोपियाइ ॥ बारबारतिहिचखतिहैं तियअध- रनिमेंलाइ २८५ ॥ प्रेमअक्षयथा ॥ येरसलोभीदृगसदा रोकेहूँअकुलाइ ॥ मनभावनमुखकमललखि परतमधुप लोंजाइ २८६ हरिलखिइननैननिलिये करिकैदुसह सुभाय ॥ खींचेआवतबलकिये छुटेलगतचढ़जाय२८७ अधिकरूपदरशायइन दृगदूतनमिलिसाथ ॥ मोमनमा निकसोतिही बेच्योहरिकेहाथ २८८॥ इतिपरकीयाभेद ॥ अथ सामान्याभेद ॥ गरबकोटिराखैतऊ लहैलोटकेभाइ॥ दाममोटयेलेतहैं कामचोटउपजाइ २८९ ल्यायेपायल होभली परीरहैगीपाइ ॥ लालदीजियेमालजो राखौं हियमेंलाइ २९० मुक्तमाललखिधनिकह्यो यहअज गुतिहैनाहिं ॥गंगतिहारेउरबसै शिवमेरेउरमाहिं२९१॥ सामान्यामध्यस्वतंत्रसामान्या ॥ सगरीवारवधूनमें प्रभुता लहैजोबाम ॥ अपनीइच्छासोंरमै ताहिस्वतंत्रानाम २९२ ॥ उदाहरण॥ संगपाइमनमोदसों रचिशुभना दविनोद । बैठिमोदमेंधनकराति छलबलसोधनगो द२९३ ॥ दूजी जननीअधीना ॥ बारबिलासनिहोइजो ज

ननीकेआधीन ॥ कैगुरुजनशासनरमै सोजननीआधी
न २६४॥ यथा ॥ परहथबसियेनिरदई धनभोजनकेचा
इ ॥ धनीप्राणपक्षीनको हनतकुहीलौंधाइ २६५ ॥ तीजे
नेमता सामान्या ॥ दिनप्रमाणकेदरबदै जोतियराखीहो
य ॥ बारबधूकेभेदमें कहीनेमतासोय २६६ ॥ यथा ॥ पि
यकेनितचितदेनलौं चितहितबढ़तबनाइ ॥ हेमनेमघट
जातही प्रेमनेमघटजाइ २६७ ॥ अथप्रेमदुःखिता ॥ एक
ठौरबासिप्रेमजो दोयबारतियआनि ॥ बिछुरतहीदुखल
हैसो प्रेमदुःखिताजानि २६८ ॥ यथा ॥ मोहिंरावरेहा
थदै धनकीनोजिनहाथ ॥ अबछूटतवहपापिनी छुट्योन
वाकोसाथ २६९ चितहितबाढ़तनेमयह बंध्योजीवसुख
पाय ॥ अबअलिछुटवतहोतदुख कीजैकौनउपाय ३००
सामान्याको सुरतारम्भ ॥ बराणिसकतसैबारतिय यहतिय
रम्भकहोइ ॥ सुखऔरनकोसुरतिको याकेप्रथमाहिहो
इ ३०१ ॥ सामान्याकी सुरति ॥ सुरतिरंगिनीयोलपकि ध
निगिरेलपटाइ ॥ ज्योंतरंगिनीसिंधुको करितरंगमिलि
जाइ ३०२ ॥ सामान्याको सुरतांत ॥ नयेरसिकदेखेनये
लेतत्रियनकेप्रान ॥ कहाकीजियेकनकलैं जातेटूटैंका
न ३०३ ज्योंआवतनिशिमीतको चितवतरहीलजाइ ॥
त्योंअबधनाहितङ्केखरी मांगतचितसकुचाइ ३०४ सुख
हितकैगुणआपने चितराखतनिजगोइ ॥ करिधनअप
नेहाथफिरिधनअपनीमतिहोइ३०५ ॥ इतिसामान्याभेद॥
अथसुरतिदुःखिता वक्रोक्तिगर्विता बर्णनं ॥ अन्यसुरतिदुखि
ताबहुरि तीनगर्बिताआनि ॥ औरमानिनीनेमाबिनु सक

त्तियनमेंजानि ३०६ पराचीनमतिमाहिये भेदगनेनहिं जात ॥ करेनवीननकाटिकैं यहविधिसोंअविदात ३०७ अन्यसुरतिदुखिताकही खंडितातेयहजान ॥ स्वाधिन पतिकातेकढ़ो भेदगर्विताजान ३०८ मानिनिकोकढ़िमा नते तिहूँभेदतबल्याइ ॥ अष्टनायकाभेदते भिन्नदि योठहराइ ३०९ यद्यपिधरेनजीतये अष्टनायकामाहिं॥ तऊअवस्थाभेदतेसकलभिन्नह्वैजाहिं ३१० जवनवम तिमेंयोंभयो तिहूँभेदअविदात ॥ग्यारहसैबावनातियन मानगनेनहिंजात३११ ॥ अन्यसुरतिदुःखितालक्षण ॥ निज पतिरतिकोचिह्नलखै औरतियनकेअंग ॥ अन्यसुरति दुखितासोई जेहिदुखचढ़ैअनंग ३१२ पियतनलखि रतिचिह्नजो दुखितखंडिताहोइ ॥ ज्योंयहदुखपियसुर तिक्षण औरबालतनजोइ ३१३ यहैभेदइनदुहुनमें जागतहैंकविजान ॥जानतहूँपियअवगुणनि दुखीदोउ पहिंचान ३१४ ॥ अन्यसुरतिदुःखितायथा ॥ तेरोप्राण प्रकाशबर नेहबाससरसाइ ॥ मोकारणल्यायोनहीं आ योआपलगाइ ३१५ गईबागकहिबातहौं तुवहितले नरसाल ॥ सोनहिंल्याईआपही छकिआईहैबाल ३१६ कहाकहौंतोसोंअली अपनेअपनेभाग ॥ मोहिंदियो तनकनकबिधि दीनोंतोहिंसुहाग ३१७ ॥ गर्वितालक्षणं॥ गरबनउपजतहैतियहि जौलोंनहिंबशनाह ॥ सोईगर विताकोभवनस्वाधिनपतिकामाह ३१८ बातकहैजोगर बकी सोइगरविताजान ॥ वरणेपतिआधीनता स्वाधिन पतिकामान ३१९ सोइगरविताउभयविधि बरणतहैंक

विलोइ॥बक्रोकतिहैएकपुनिद्वितियसुगरवितहोइ ३२०
बक्रोक्तिगर्विताय्था ॥ पियमूरतिमेरीसदा राखतदृग
नबसाइ ॥डरियतगोरीदेहयह मतिसाँरीकैजाइ ३२१
शुद्धप्रेमगर्विता ॥ मोचखपियपक्षीनहीं जोजलजलमेंजा
हिं ॥ मीनरूपजामेंपरे सदारहैतिहिमाहिं ३२२ मोहिं
भूषणकीभूषणाहिब्रजभूषणकोप्यार ॥ मनसोंरहीशृंगा
रिकै तनसोंहीशृंगार ३२३ ॥ बक्रोक्तिरूपगर्विता ॥
यौवनलहियनरूपढिग अद्भुतगतियहकीन ॥ आप
जगतकोमारिकै हत्यामोहिंशिरदीन ३२४ ॥ शुद्धरूप
गर्विता ॥ जोदुखकमलनदुखतनहिं मेरेरूपसुजान ॥
तौमोआननजितकहो सरसिजमंत्रसमान ३२५ हौंन
सहौंगीबातआलि तोसोंकहतिनिशंक ॥ मेरेमुखकोचंद्र
कहिलावतलालकलंक ३२६ ॥ बक्रोक्तिगुणगर्विता ॥
मोपैगुणकछुवैनहीं ऐसोतैंहितपाइ ॥ अपनीबारीहूँपि
यहि मोघरजातिपठाइ ३२७ ॥ शुद्धगुणगर्विता ॥ तो
पठीनजोछीनकै सौतिनसोंरसलीन ॥ भीनतारकजो
बीनके करोबांधिआधीन ३२८ कोचतुराईजोनहो
एककलामेंजीति ॥ आजुललामनकोकरों हाथछला
कीरीति ३२९ ॥ मानिनीलक्षण ॥ पियतेकछुअपराध
किय तियउदासजोहोइ ॥ ताहिमानिनीकहतसबजे
पंडितकविलोइ ३३० तीनिभांतिपियसोंकरतिमा
नकोपपरकास ॥ मुखपरिकैपीछेकिधौंचुपकैरहैउदा
स ३३१ मुखपरकहैसोपंडितापीछेअन्यसँभोग ॥ औ
रतीसरीमानिनीयहहैमौनप्रयोग ३३२ ॥ मानिनी

यथा ॥ पियअपराधनजानियतकोजानौकिहिकाज ॥
बैठीभौंहचढ़ाइकैंश्रीवनवायेआज ३३३ अथअष्टनायका
अवस्थाभेदतेकथन ॥ जिहिगुणपियआधीनसोस्वाधिन
पतिकानाम ॥ पियआवनदिनतबसजैबासकशय्यावा-
म ३३४ कौनेहेतुनआवईप्रीतमजाकेगेह ॥ ताको
शोचकरैहियेउत्कंठितासोयेह ३३५ करैचलनचरचा
चलैपहुँचैलौपियपास ॥ बोलपढ़ावैसिखसुनैअभिसारि
काप्रकास ३३६ सजिशृँगारजोजायातियललनमिलन
केहेत ॥ बिनुपियभेंटेरिसकहौबिप्रलुब्धातिहिचेत ३३७
पररतिचिंतातिपियाचितैबलिपंडितारिसाइ ॥ कलहंत-
रिताकलहकरिफिरिपीछेपछिताइ ३३८ प्रोषितपति
काजाहिपियचल्योह्योयपरदेश ॥ गामिष्यपतिजिहिदि-
नहिंमेंचलनचहैप्राणेश ३३९ गच्छतपतिकाजाहि
पियचलनसमैमेंहोइ ॥ पतिआगमनसँदेशलहिआग
मिष्यत्पतिजोइ ३४० आयमिलैजोबिदेशतेआगतपति
काजान ॥ बिछुरयोपियआयोसुन्योआगतपतिकामा-
न ३४१ हैअरुहानोकैचुक्योविरहजोतीनप्रमान॥एकैक
रिसबकोगनैअष्टनायकाजान ३४२ उचितनइननारीन
मेंमुग्धावरणनल्याइ ॥ पैबिश्रब्धनवोढ़गुनदीनोंहैठह
राइ ३४३ सातोंपतिकादिकनमेंमुग्धाऊपुनिहोति ॥
पैबिनुचाहदुहूनकेरसकीहोतिनजोति ३४४ स्वाधीन
पतिकामेंमुग्धास्वाधीनपतिका॥ रूपनआयोसोकछूजोधनक
रिहोहाथ॥अबहीतेचाकरभयेकहांडोलियतनाथ ३४५
ज्योंज्योंलालनप्रेमवशसँगनतजतादिनराति ॥ त्योंत्यों

लाजसमुद्रमेंतियबूड़ीतिसीजाति ३४६ मध्यास्वाधीनपति
का ॥ पियपगधोवतिभावतीकौतुककरतिबनाइ ॥ खिन
कभ्रवावतिपाइखिनखैंचिलेतिसकुचाइ ३४७ ॥ प्रौढ़ा
स्वाधीनपतिका ॥ निरखिनिरखिप्रातिद्योसानिशिपियचख
तियमुखओर ॥ कमलजानिअलिहोतहैंशशिअनुमान
चकोर ३४८ निकसतहीपाछेपरत आवतआगे
होत ॥ रविग्रहसनमुखघामलौं तियतुवप्रकृतिउदो
न ३४९ ज्योंज्योंपियचितचायसों देतमहावरधाइ ॥
त्योंत्योंपियअतिरीझकै नैननमेंमुसकाइ ३५० ॥
परकीयास्वाधीनपतिका ॥ योंहींलाजनखाइये फिरिफि
रिमेरेसाथ ॥ परकीयाआवतिकहूँ घातपरेहीहाथ ३५१
मोमनपंथीप्रीतिगुण बांधिरह्योहैनाथ ॥ जोउदासह्वै
उड़तहै तौफिरिल्यावतहाथ ३५२ ॥ सामान्यास्वाधी
नपतिका ॥ कितीरूपअरुगुणभरीकतमोहीकोलाल ॥
कंकणदैकरगहतहौ हियलावतदैमाल ३५३ ॥ अथ
मुग्धावासकशय्या ॥ इकभूषणसखिसजतिहै पियकोआग
मजानि॥दूजेनवलास्वेदते निजतनराखतिआनि ३५४
सौतिहारतकिनवलतिय मिसगसकोठहराइ ॥ पिय
आवतगुणमुकतिकी गूँधतिमालबनाइ ३५५ ॥ मध्या
वासकशय्या ॥ लालमिलनगुणितनसजति बालबदन
कीजोति ॥ खिनककमलसीमालिनखिन अमलचंद्रसी
होति ३५६ ॥ प्रौढ़ावासकशय्या ॥ बदनजोतिभूषणप-
हिर चखचकचौंधतिबाल ॥ मोहिंशोचयहअंगतुव कै
सेलखिहैंलाल ३५७ तियसुखसेजबिछायपयों रहीबाट

पियहेरि॥ खेतबुवाईकृषणज्यों रहतमेघअवसेरि ३५८ परकीयावासकशय्या ॥ दिनअन्हाइसाजैवसन गीतमिलनसुखपाइ ॥ निशीश्रौसगिनिसंगही द्वारेपौढ़ीजाइ ३५९ सामान्यावासकशय्या ॥ नखशिखकरतशृंगार तनधनीआइबोजानि ॥ अंगअंगसाजतिसिलहसुभटयुद्धअनुमानि ३६० अथमुग्धाउत्कंठिता ॥ खेलनबैठीसखिनसंग नवलबधूचितलाइ ॥ पियबिनुआयेशोचमें खेलभूलिसोजाइ ३६१ लालनआयेबालसों कह्योनलाजलगाइ ॥ खुल्योकुमुदसोंहियगयो मुंदिसरोजकेभाइ ३६२ मध्याउत्कंठिता ॥ आवनकहिआयोनपियगईयामयुगराति॥ शोचसंकोचनमेंपरीखरीबालबिललाति ३६३ पियआयेनहिंयहव्यथा रहीजुबालदुराइ ॥ मुंदेनेहकीबासलौंमुखपरप्रकटिलखाइ ३६४ प्रौढ़ाउत्कंठिता ॥ सखीकह्योजियजानिकै आजुनआयोनाह॥ गृहमूखेखगलौंफिरे मोमनशोचनमाह ३६५ परकीयाउत्कंठिता ॥ बुलवाईआयेनपिययहैशोचजियल्याइ॥ पिंजरपक्षीलौंतिया कुंजरलोंबिललाइ ३६६ सामान्याउत्कंठिता ॥ पियनहिंआयेअवधिबदिनैनरहेमगजोइ ॥ औरनकेगृहजानकी दईशरमसबखोइ ३६७ अथमुग्धाभिसारिका ॥ नैनचकोरनचान्द्रिका प्यारीआजुनिशंक ॥ आसवासआवतनखतलीनेबीचसशङ्क ३६८ चलियेनवलाबदनते नामतिहारेलाल॥ हांसीबातनमेंकढ़ीहाँसीनिकसीहाल३६९॥ मध्याभिसारिका ॥ दुहुँदिशिकचकुचभारतेभुकतिजातियों

बाल ॥ मानहुँआसवतेछकीचलीछकावनिलाल ३७० ॥ परकीयाभिसारिका ॥ योंऐंचतिपगमगधरतिउरभ्भैउरग अधीर ॥ ज्योंमदमत्तमतंगछुटिखैंचेजातजँजीर ३७१ ॥ कृष्णाभिसारिका ॥ पियकेरंगभयेबिनामिलनहोतनहिंबाम ॥ यातेतूँरंगश्यामकैमिलनचलीहैश्याम ३७२ अंगछपावतिसुरतिसोंचलीजातियोंनारि ॥ खेलतिबिज्जुछटाचितैढांपतिघटानिहारि ३७३ ॥ शुक्लाभिसारिका ॥ सजेश्वेतभूषणबसनजोन्हमाहिंनलखाइ ॥ पटउघरतघनबदनद्युतिचमकिछैजसीजाइ ३७४ श्वेतबसनयुतजोन्हमेंयोंतियद्युतिदरशाइ ॥ मनोचलीक्षीरधिसुताक्षीरसिंधुमेंजाइ ३७५ ॥ दिवाभिसारिका ॥ पहिरिदुपहरीअरुणपटचलीशोचसचिनाहिं ॥ नेकनजानीपरतितियफूलेकिंशुकमाहिं ३७६ ॥ सामान्याभिसारिका ॥ चलीवारातियमीतपैजिहिधनहेतुलुभाइ ॥ सौतिनछबितेछकिरह्योअ-भरनकैलपटाइ ३७७॥ अथमुग्धाविप्रलुब्धा ॥ सखिनसंगनवलागईपियहियामिलननिकेत ॥ अरुणकमलसोंमुखभयोदिनाहिमशङ्कसमेत ३७८॥ मध्याबिप्रलुब्धा ॥ लख्योनपियगातिभवनमेंतबसखिसोंसमुहाइ ॥ बैननमेंअनखाइतियनैननरहीलजाइ ३७९ ॥ प्रौढ़ाबिप्रलुब्धा ॥ लखिसँ-केतसूनोरहीयोंतियनारिनवाइ ॥ मनोबिनयशिवकीकरैसबलकामकोपाइ ३८० ॥ परकीयाविप्रलुब्धा ॥ जोसँगलैकुंजनगईबालमालतीफूल ॥ मधुपमिलेबिनुकैगयेसोगुड़हरकेतूल ३८१ सामान्याबिप्रलुब्धा ॥ निजघरआयोरसिकसजिगईजिहिंधनीचाइ ॥ सोनामिल्योयोंहीं

गयेधनमेरेकरआइ ३८२॥ अथमुग्धाखंडिता ॥ सखिन सिखायेतियकह्योलखिजावकपियभाल॥ताहीकेघरजा- इयेजिहिंपगलागेलाल ३८३ ॥ मध्याखंडिता ॥ पिय तननखलखिकरतजोतियबेदनअविदात॥ कछूखुलति कछुनहिंखुलतितुतरेकैसीबात३८४॥प्रौढ़ाखंडिता ॥लाल तिहारेभालकोजावकपावकनेन॥ जिनमेरेमनमैनकोजा रिदियोज्योंसैन ३८५॥ परकीयाखंडिता ॥ मीननहींयहपे खियताजिनजिनलागोदाग ॥ दृगनरावरेकीललापल नलागीआग ३८६ तनअङ्कनआङ्कितनिरखि आलि ङ्गनपरतीक ॥ जोकछुकहियतठीककरि सोसबहोतअ लीक ३८७ ॥ सामान्याखण्डिता ॥ जान्योबिनगुणमाल को मालठामलखिकन्त ॥ मोमनमाणिकलैदयो मन माणिकतुवअन्त ३८८॥ अथमुग्धाकलहांतरिता ॥ लाल विनयमानीनातिय अबमनमेंपछिताइ ॥ बिपुलमध्यको दुखतनिक मुखपैहोतलखाइ३८९॥ मध्याकलहांतरिता॥ पियविनतीकरिफिरिगये सोकलेशसरसाइ ॥ तियमु खअम्बुजतेनिकसि मधुपरीतिदुरिजाइ ३९० ॥ प्रौढ़ा कलहांतरिता ॥जियनहिंआन्योपियवचन नाहकठान्यो रोष ॥ अमृततजिमैंविषपियों दउँकोनकोदोष ३९१ तबनलखेपियबदनशशि कीन्ह्योकोटिप्रकार ॥ अब अलिनैनचकोरये लीलतविरहअँगार ३९२ ॥ पर कीयाकलहांतरिता ॥ जाहिमातुहितपतितज्यो तज्योता हिजिहिहेत ॥ सोवहकोपहुतजिगयो करिहियबिपरि निकेत ३९३ अलीमानअहिकेडसे झाख्योहरिकरिने

ह ॥ तऊक्रोधविषनाछुट्यो अबछूटतहैदेह ३९४ ॥ सामान्याकलहांतरिता ॥ जाकेमिलतमिटीसकल हुतीसा धजोप्रान॥ ताकीबातसुनीनमैं नेहतूलदैकान ३९५ ॥ मुग्धाप्रोषित पतिका ॥ पियबिछुरनदुखनवलातिय मुख सोंकहतलजाइ ॥ बदनमुंदेनलनीरके जलसमरुकेबना इ ३९६ ॥ मध्याप्रोषितपतिका ॥ पियबिनुतियदृगज लनिकासि योंपुतरीनबिलात ॥ ज्योंकमलनतेरसभरत मधुकरपीवतजात ३९७ तियउसासपियबिरहते उस सिअधरलौंआइ॥ कछुबाहरनिकसतकछुकभीतरकोफि रिजाइ ३९८॥ प्रौढ़ाप्रोषित पतिका ॥ निशिजगाइप्रात हिंचलत प्राणमजूरीहाल॥ अंगनगरमेंबिरहयह भयो नयोकोतवाल ३९९ निशिदिनबरषतरहतहूं तहंकहुंघ टतनमूल॥ नैननीरहियअग्निको भयोघीवकेतूल ४००॥ परकीया प्रोषितपतिका ॥ रक्तबूंदकाजरभरे योंरोवति दु रिबाल॥ मनोंनिशानीवादृगन दईगुंजकीमाल ४०१॥ सामान्या प्रोषितपतिका ॥ जोशृंगारतियकरतिनित नि तधनकेशकुमार॥ धनीबिरहतेहोतसो अँगअँगमाहिंअँ गार ४०२ बिथाधनीसोंकहनको निजगुणपथिकबुला इ ॥ रेयजनावैनेहातिय नेहदृगनमेंलाइ ४०३ ॥ इति अष्टनायका। अथ गमिष्यत् पतिका ॥ जाकोपियकछुदिननं में चलनहारहोजाइ॥ बढ़तबिरहउरशोचअति जातब दनकुम्हिलाइ ४०४ ॥ मुग्धागमिष्यत्पतिका ॥ जोनव लामनमेंदयोनयोनेहतरुलाइ॥ बिरहातपारितबाततेजनु डार्योकुंभिलाइ ४०५ रवनगवनसुनिकैश्रवन दृगदेखनं

मिसठानि ॥ तियअंजनधोवनलगी अँशुवनकोजल आनि ४०६ ॥ मध्यागमिष्यत्पतिका ॥ कहनचहतपिय गवनसुनि कह्योनमुखतेजाइ ॥ लाजमदनकोझग रिबो नहिंहियहोतलखाइ ४०७॥ प्रौढ़ागमिष्यत्पतिका॥ कातिकपूनोअंतसुनि पूरबप्रियप्रस्थान॥ काननमुखश शिकोभयो अगहनगहनसमान ४०८ पहिलेपक्षमें आइहो पियअसाढ़केमांस ॥ प्रथमहिंझारिक्षितिबासु लो निकसतपैहोसांस ४०९ ॥ परकीयागमिष्यत्पतिका ॥ मिलनघरीज्योंज्योंप्रथम दुखदीनोंतुमश्याम ॥ त्योंचा हतहौअबलयो लैबिदेशकोनाम ४१० ॥ सामान्यागमि ष्यत्पतिका ॥ रच्योगवनतोकरिकृपा मोहिंदीजियोला ल ॥ जियराखनकोउरबसी नामजपनकोमाल ४११ अथगच्छत्पतिका जाकोपिय चलनसमयहोइ तामें मुग्धाग च्छत्पतिका॥ ज्योंज्योंलालनचलनकी प्रातघरीनियरा त॥ त्योंत्योंतियमुखचन्दकी ज्योतिघटतसीजात ४१२ मध्यागच्छत्पतिका ॥ पियकेचलतविदेशकछु कहिन हिंसकतिसंजोर॥ चरणअगूनासोरहे दाबिपिछोहीछो र ४१३ पियबिछुरनखिनयोंतिया चषअंशुवागरआ इ॥ मनुमधुकरमकरन्दको उगलिगयोफिरिखाइ ४१४ मध्यागच्छत्पतिका ॥ चेतनुजनुतेरोकहो कहाहोयगो रंग॥ घरीएकमेंचलतहै जियतोपियकेसंग ४१५ गवन समयापियकेकहति योंनैननसोंसीय ॥ रोवनकोदिनबहु तहैं निरखिलेहुखिनपीय ४१६॥ परकीयागच्छत्पतिका ॥ कंरीदेहजोचीकनी हरिनितलाइसनेह ॥ विरहअग्निज

रिखिनकमें होनिचहतअबखेह ४१७ ॥ सामान्यागच्छत्पतिका ॥ पहिलेचितदैआपनो जोकीनोचितहाथ ॥ तोहितुतोरिबिदेशको कतचलियतअबनाथ ४१८ ॥ अथ आगमिष्यत्पतिका । जाकोपिय बिदेशते आवनहारहोइ तामें मुग्धा आगमिष्यत्पतिका ॥ दिनद्वैमेंमिलिहैंइन्हें पियबिदेशसेआइ ॥ सखियनसोंयहसुनातितिय अँखियनरहीलजाइ ४१९ ॥ मध्या आगमिष्यत्पतिका ॥ बामनैनफरकतभयो बामाआनंदआइ ॥ खिनउघरतिखिनमुंदतिहै बादरधूपसुभाइ ४२० प्रौढ़ाआगमिष्यत्पतिका ॥ पातीआईअरुसुन्यो पियआगमनप्रकास ॥ यातेकामिनिप्राणको उपज्योदुगुनहुलास ४२१ नैनबाहुकीफरकिलहिअरुबोलतसुनिकाग ॥ अंगअंगतियकोलग्यो बरसनआनिसुहाग ४२२ हरिआगमसुनिपथिकमुख उमगेहरषसनेह ॥ नखतेशिखलौंनारिकी भईचीकनीदेह ४२३ ॥ सामान्याआगमिष्यत्पतिका ॥ आवतसुनिपरदेशते धनीमित्रतियआस ॥ बारबिलासिनिकेभयो बाराहिबारबिलास ४२४ ॥ आगच्छत्पतिकाजोतिय विदेशतेआयोसुनेतामें ॥ मुग्धाआगच्छत्पतिका ॥ पियआयेयहसुनिभयो हरषबालतनआय ॥ कमलकलीलोंअरुणता कछुमुखपैदरशाय४२५॥ मध्या आगच्छत्पतिका ॥ लाजवतीपरदेशते पियआयोसुधिपाइ ॥ निशिदिनमधुकेकमललौं बिकसतसकुचतजाइ ४२६ ॥ प्रौढ़ाआगच्छत्पतिका ॥ पियआवतसुनिकैतिया बहुमनमेंपछिताइ ॥ पंखनहींजोउड़िमिलौं सबसेपहिलेजाइ ४२७ ॥ परकीया आगच्छत्पति

का ॥ आवतसुनिघनश्यामको आनदेशतेबात ॥ चप लाकैचमकनलग्यो नेहनहींकोगात ४२८ ॥ सामान्या आगच्छतूपतिका ॥ धनीमित्रआगमनसुनि सजिशृंगार अभिराम ॥ बैठीबाहरनगरके डगरबांधिकैबाम ४२९ अथआगतपतिकाजाकोपियपरदेशतेआनिमिल्योतामेंमुग्धाआगत पतिका॥ बिछुरिमिल्योपियबांहगहिज्योंज्योंबूझतजात॥ बूड़ीलाजसमुद्रतियसुखतेकढ़तनबात ४३० पियआये आनंदजो भयोतियाउरआइ ॥ घटमधिदीपकज्योति लोंकछुमुखतेदरशाइ ४३१ ॥ मध्याआगतपतिका ॥ आयोपियपरदेशते तियबैठीसकुचाइ ॥ तिरछीआँखि यनहींकछुकलखतकनाखियनचाइ ४३२ ॥ प्रौढ़ाआ गतपतिका ॥पियलखियोंतियदृगनदैअंजनआँशूडारि॥ ज्योंशशिनिरखिचकोरवैबुझीचिनगिनीडारि४३३ तिय हँसिबातियाकरतमेंअँशुवाढारतिजाइ ॥ मिलनबिरह सुखदुखकहत भईफुलभरीभाइ ४३४ सखईबिछु रनाशिशिरकीकैलहलहीतुरंत ॥ बेलिरूपप्रफुलितभई लहिबसंतसोंकंत ४३५ ॥परकीयाआगतपतिका ॥ ग येबीतादिनबिरहके आयोनिशिआनंद ॥ प्रेमफँदी कुमुदिनिभई निरखतहीब्रजचंद ४३६ ॥ सामान्या आगतपतिका ॥ तुवबिछुरततननगरमें बिरहलुटेरे आइ ॥ मेरेसुबरणरूपको लीनोलूटिबनाइ ४३७ आगतपतिकामें संयोगगर्विता लक्षण ॥ पियआयोपरदेश ते गर्बकरैजोबाल ॥ सोसंयोगनिगर्बिता बरणतबुद्धिबि शाल ४३८ ॥ यथा ॥ कहांगयेवजलदजे नितउठिजारत

जाइ ॥ गाइमलारबुलाइये तऊनपरतलखाइ ४३९ ॥ अथ उत्तमा मध्यमा अधमा क्रमते कथनम् ॥ होइनहींङ्कैके मिटै नाहकहूंजगसान ॥ कहोउत्तमामध्यमा असपरक्त तपरमान ४४० केहूअवगुणकंतके लखैंनाहितकेजोर ॥ पियमयंकमुखकेभये रमणीनैनचकोर ४४१ यदपि मधुपरसलेतहैं सबफूलनमेंजाय ॥ तदपिमालतीकेहिये अवगुणनहिंठहराय४४२ मध्यायथा ॥ पियसन्मुखसन्मुखरहित बिमुखविमुखह्वैजाति ॥ धनदरपणप्रतिबिम्ब लौं तेरीगतिदरशाति ४४३ विनुसनेहरूखेपरत लहि सनेहचिकनाइ ॥ बिषसुभावयेकचनके तिनमेंतुवदरशाइ ४४४ ॥ अधमा यथा ॥ ज्योंज्योंआदरसोंललन पानि पदेतबनाइ ॥ त्योंत्योंभामिनिनैनवो खिनाखिनऐंठति जाइ ४४५ विनहीअवगुणपगनपरि यदपिमनावाहिंलाल ॥ तदपिमानहूंपैसदा रहैअनमनीबाल ४४६ ॥ अथ चारिभेद नायकाजाति विधिते कथन तत्र पद्मिनीलक्षण ॥ तन अमोलकुन्दनवरण समसुरीधसुकुमार ॥ सूक्षमभोजन रोषरति सोपदमिनिनिरधार ४४७ ॥ यथा ॥ तनसुवास हगसलजशुभ मनशुचिकरमसुनीत ॥ इनसुबरणबरणी लई जगतानिकाईजीति ४४८ सोनोऔरसुगन्धहै बाल सलोनोगात ॥ जापैपियचखभंवरलौं सदारहतमड़रात ४४९ अथचित्रिणीलक्षण ॥ जिहिमृगनैनीकोरहै नृत्य गीतमेंध्यान ॥ चोपसदापियाचित्रसों वहचित्रिणीसुजान ४५० ॥ चित्रिणीयथा ॥ तियनिजपियकोचित्रमें सौंतुकदरशनपाइ ॥ गाइगाइनृत्यातिरहाति भांतिभांतिकेभा

इ ४५१ मित्रनाहिंचितवतकहीं चित्ररहीचितलाइ ॥
पत्रीहेरतिहैकोऊ पत्रीसन्मुखपाइ ४५२ ॥ शंखिनीलक्ष
ण ॥ देहछीनमोटीनसैं कुचलघुनिलजनिशंक ॥ कोपव
तीनखदन्तरुचि शंखिनिपीकेअंक ४५३ ॥ यथा ॥
सनखाहियोलखिलालको यहमनहोतसँदेह ॥ नख
नखोदिचाहातिकियो लालनकेहियगेह ४५४ ॥
हस्तिनीलक्षण ॥ थूलअंगलोमनछयो गोरीभूरेकेस ॥
गजगौनीदुरशीधनी भनिहासितनियहभेद ४५५ ॥
यथा ॥ रंगनीमोटीगोरटी यौवनमदऐंड़ाति॥ सखि
नसंगगजगामिनी चलीठानसोंजाति ४५६ ॥ अथ
त्रिबिधनरूमकालोकभेदतेकवर्णनं ॥ इंद्रानीदिब्याकहै नर
तियकहैअदिब्य ॥ सियलौंजोतियअवतरै सोकहि
दिब्यादिब्य ४५७ ॥ नेमवर्णनम् ॥ कामवतीअनुरा
गिनीप्रौढ़ाभेदप्रमान ॥ ज्येष्ठकनिष्ठाहूबिषे मानवती
जियजान ४५८ तियअभिलाषदशामई लालसमती
कहाइ॥ ताहिसोमतीकहतहैं चुंबनआदिथिनाइ ४५९
स्वकियनेमधीरादिको बरणगयेप्राचीन ॥ मानहेतुल
बतियनरहि रावतबरबरबीन ४६० कुलटाछुटजोभेद
सो परतियकेसबआइ॥ स्वकियाहूमेंकैसकत त्रपाहास
कोपाइ ४६१ त्याहींपरकीयानमें हैमुग्धादिककर्म ॥
ज्योंबिद्याबांचतसबै हैब्राह्मणकोधर्म ४६२ लोकभेद
दिब्यादिहै यहाजियमेंअचिरेख॥इतनीबिधिसबनायका
बरणतबुद्धिबिशेख ४६३॥ नायकाभेदमध्याबिबेककथन ॥
स्वकियादिकहूभेदको कर्मभेदजियजानि ॥ मुग्धादिक

कोचितबिषे भेदबहिक्रममानि ४६४ अन्यसुरतिदुख दादिको अष्टनायकासंग ॥ गनतअवस्थाभेदमें जिन कीबुद्धिउतंग ४६५ उत्तमादिकोबूझिये प्रकृतभेदहिय माहिं॥ पद्मिनिआदिकबित्तमें जातिभेदठहराहिं ४६६ नायकाकीगणना ॥ इकस्वकियाद्वैपरकिया सामान्याभि-लिचारि ॥ अष्टनायकामिलिसोई बत्तिसहोतबिचारि ४६७ उत्तमादिसोंमिलिवहै सुनछियानबेहोत ॥ पुनि चौरासीतीनसै पद्मिनिआदिउदोत ४६८ राचेसैबावन बहुरिदिब्यादिकरेसंग ॥ योंगणनामेंनायकाबरणीबुद्धि उतंग ४६९ अथतेरहविधिस्वकीयाभरतमतेकथनं ॥ सात बरषलौंजानिये देबीबिधिपरमान ॥ बहुरोदेबीरीधरचि चौदहलोधहजान ४७० तेहिपीछेइक्कीसलों सुधीगंध बीहोय॥पुनिगंधविमिलिमानुषीअट्ठाइसलौंजोइ ४७१ शुद्धिमानुषीकोबहुरि पैंतिसलौंउरधारि ॥ सातबर्षप्रति प्रतिलहति पांचनामयेनारि ४७२ पुनिइनपांचो भेदमें तीनिभेदयोंजान॥ साढ़ेदशलौंरहतिहै गौरीवैसप्रमान ४७३ पुनिपौनेदशलौंरहै ओहीगौरीलेश ॥ सत्राबार हीबर्षपरपुनिलक्षिमीसुदेश ४७४ साढ़ेचौबिसलौंरहै वैसलक्षिमीआन ॥ तेहिऊपरपैंतीसलौं वैससरस्वति जान ४७५ पैंतिसऊपरनारिके औरवैसकोलाइ ॥ नहिं वरणतरसग्रंथमें यहकबिकहतबनाइ ४७६ गौरीपूजन योगहैलक्ष्मीभोगसमर्थ॥ बहुरिसरस्वतिजानिये मतोबूझिबेअर्थ४७७ताहिलक्षमीवैसमें स्वाकियातेरहजानि॥ तामेंमुग्धापांचविधिभरतमतेपहिंचानि४७८पुनिमध्या

हैचारिविधि प्रौढ़ाहूपुनिचारि ॥ सोइनतेरहभेदमें मुग्धा येउरधारि ४७९ प्रथमअंकुरितयौबना तीनिमासलौंहोइ ॥ नवलबधूषटमासलौं यहनिश्चयजियजोइ ४८० बहुरिचौदहेंबरषपुनि नवयौवनानिवास ॥ नवलअनंगापंद्रहें बरषकरतपरकास ४८१ होयसोरहेंबर्षपर पुनिसलज्जरतनारि ॥ अबमध्याकोबरणिपुनि प्रौढ़ाकहौंबिचारि ४८२ होतबर्षउनईसपै प्रगलभवचनाआनि ॥ बहुरिबीसयेंबर्षमें सुरतिबिचित्रामानि ४८३ प्रौढ़ालबधापतिबहुरि इकइसमेंसोहोति ॥ बाइसवेंरतिकोबिदा जानतहैंकविगोति ४८४ तेइसयेंबासिवल्लभा नामधरतबुधिवंत॥साढ़ेचौबिसलौंबहुरिहैशुभरमाअंत४८५॥ अथद्वितीयभेदवैसकोक्रमतेकथनम्। सातबर्षलौंजानियेकन्याकोपरमान ॥ तेरहलौंगौरीबहुरिबालावैसनिदान ४८६ तरुणीकहैंतेईसलौं प्रौढ़ापुनिचालीस ॥ इहिबिधितियवैकोकसति बरणबईकविईस ४८७ ॥ इतिनायकाभेद ॥ अथनायककथनम् ॥ कहीनायकाकहतहौं अबनायकरसबीन ॥ आलम्बनमेंदूसरो जिहिबरणतपरबीन ४८८॥ अथनायकलक्षण ॥ उपजैजिहिनरनिरखिकै नारिनहींप्रतिभाव ॥ ताहीकोनायककहैं जेप्रबीणकविराव ४८९॥ नायकगुणकथनम् ॥ धरेरूपगुणधनमनी सबलअमलरसपानि ॥ दानीधीररुभीरते नायकसागरजानि ४९० इंद्ररूपगुणज्ञानते वितपशुसागरदान॥ कामकलाधरिअवतरै सोतुवहोयसमान ४९१ ॥ अथत्रिविधनायककथनम्॥ सुकियापरकीयाप्रतिहि पतिउपपतिहैनाम ॥ सामान्या

मित्रहिकहैं वैसिककविअभिराम४९२॥पतिकोउदाहरण॥
जिनचाहीकुलकानितिन धरीकानयहल्याइ ॥ पतिनी
कीनहिंपाइये बिनुपतिनीकेपाइ ४९३ जबतेलालनर
मनको गमनलेआयेसंग ॥ तबतेशिवलौंआपनो करि
राखीअरधंग ४९४ ॥ पतिकेभेदचारिकथनं ॥ इकतियर
तिअनुकूलहै दक्षनशीलसमान ॥ शठकपटीमिठबोल
नो शिष्टजोदीठनिदान ४९५ ॥ अनुकूलयथा ॥ नयेब
सनजबहौंसजों तबपियभरमिलिजाहिं ॥ बिनुपरुषेधु
निबचनके हेरिसकतिहैनाहिं ४९६ पातनलैपगलैधर
त करतशीशपटछाहिं ॥ यहिबिधिपियप्यारीलिये पहि
रतउपबनमाहिं ४९७ ॥ दक्षनयथा ॥ सागरदक्षनदुहुन
की समबरणतहैंप्रीति ॥ छहनबिपिनयहातियनसों मिल
तएकहीरीति ४९८ सजिशिंगारआईतियातनुपियदीप
दुराइ ॥ बोल्योहंसिहंसिनिजकरन ल्याबेदियाजरा
इ ४९९ योंबनितनिपियबातसों अतिअनन्दसरसा
त॥ ज्योंबोलनिसुखहोतहै सुनिबसंतकीबात ५०० चं
हुंदिशिफेरतहैबदन योंरचिरामअनूप ॥ मानोतियकेहे
तपिय धस्योचतुर्मुखरूप ५०१ ॥ शठयथा ॥ हेरिहेरिमु
खफेरिकत तानतमोहानिदान ॥ बाणनबुधिकोऊनहीं रा
खीचढ़ीकमान ५०२ रहतरूठिकैबालसों दगदुखदेत
बनाइ ॥ ढूंढ़िरहेहूबालकहं नैननआधिकसोहाइ ५०३
॥ शिष्टयथा ॥ कालगयोहीआपही सौरिरसौंहैंखाइ ॥ आ
जशीशजावकलिये फिरिलोटतिहैपाइ ५०४ पियसोंति
नकेनेहमें घनेसनेहैंनैन ॥ यातेपानिपलाजको केहूबि

धिठहरैन ५०५ ॥ अनुकूलादिकमैं। उपपतिवैसिकहूतेहैं स कत यह कथनम् ॥ अनुकूलादिकयेचतुर भेदजोसोइठह राइ ५०६ ॥ उपपतिको उदाहरण ॥ सुखबाधनकोमिलन को किहिविधिबरणैकोइ ॥ चोरीकोगुरुविदितयह निपट स्वादकोहोइ ५०७ बंशीटेरीआइहरि तियदेखनिकेचा इ ॥ खिरकीखोलतहीगिरे कछुफिरिकीसीखाइ ५०८ य हचरित्रतियकीकथा कहियेकाहिसुनाइ ॥ मोघटआग लगायकै घटलैजलकोजाइ ५०९ आईवहपानिपभरी रमनीआजुअन्हान ॥ जिहिबूड़निनिकसनिलखे निकस तबूड़तप्रान ॥ ५१० उपपति त्रिबिधिभेद ॥ उपपतिती नप्रकारपुनि गूढ़मूढ़आरूढ़ ॥ तिनकोयहबिधिआनिकै बरणतहैंमतिमूढ़ ५११ ॥ गूढ़लक्षण ॥ परतियसोंमिलिने हजो दुरयेरहैबनाइ ॥ दिनदिनकरहिबिनोदअति सोई गूढ़कहिजाइ ५१२ ॥ यथा ॥ पियनिजतियहियबसतयों दुरयेपरतियनेह ॥ मधुपमालतीछकतिज्यों करतिकमल मेंगेह ५१३ ॥ मूढ़लक्षण ॥ परनारीकेनेहको कहिनिजध नकेपास ॥ फिरिधनकेरूसेभगै हियमेंमूढ़उसास ५१४ यथा ॥ परतियहितनिजनारिसों योंकाहिपियपछिताइ ॥ कुमतिचोरज्योंआपनी चोरीआपबताइ ५१५ ॥ आरूढ़ लक्षण ॥ सदापरायेगेहजो परतरुणीहितजाइ ॥ नितब न्धनतातृणसहै यहआरूढ़सुभाइ ५१६ ॥ यथा ॥ कुलट नकेसँगपकरिकै मारोबांधिअभीत ॥ कोउछूटेपरकहत हैं भईहमारीजीत ५१७ ॥ वैसिकको उदाहरण ॥ सुबरण बरणीद्वारपै बैठीपानचबात ॥ ऐंठीसीचाखियनचितै जि

यमैंपैठीजात ५१८ लालअधरहियरँगरदन जिहिसुब
रणतनसाथ ॥ दीजैक्योंहीलायकै कीजैतिहिधरमाथ
५१९ कौनयतनकरिराखिये,ताकोनितहितलाइ। अष्ट
पदनसोंलेतकर जाकेवियपदजाइ ५२० ॥ वैसिकभेद ॥
वैसिकहैपुनिउभयाविधिप्रथमजानअनुरत्त ॥ ताहीकोपु
निजानियेभेददूसरोमत्त५२१।अनुरक्तलक्षण॥होइजोमन
बचकरमसोंगणिकाहीसोंलीन॥ताहीसोंअनुरक्तकहिभा
षतहैंपरबीन५२२॥ यथा ॥ यामनमेंअबकौनविधिदूजी
आनिसमाइ ॥ बारबिलासनिकेरह्यो सदाबिलासनिछा
इ ५२३॥ मत्तलक्षणं ॥ दूजोवैसिकमत्तहै यहबरणतसु
धितत्त॥ सोईतीनविधिकाममत सुरामत्तधनमत्त ५२४
काममत्त यथा ॥ फिरतरहतनितकामबश कहूंननैनअ
घात ॥ दिननिजघरनिशिपरघरहि बारिनारिघरिप्रा
त ५२५॥ सुरामत्त यथा॥ चंपकबरणसुबासतानि निजध
नकीनसुहाइ ॥ बारबधुनकेनितफिरै मदपीवनकेचा
इ ५२६॥ धनमत्तयथा ॥ रूपगुणनमेंआगरी नगरनाग
रील्याइ॥ बशकेवलइनछुद्रयह बशकरिलईबनाइ५२७
नायक उत्तमादि त्रिविध भेद प्रकृतिगुणते कथन ॥ पतिउ
पपतिवैसिकतिहू उत्तमादिजियजानि ॥ग्रंथनकोमतदे
खिकै बरणतहैंकबिआनि ५२८ ॥ उत्तमादिलक्षण॥ उत्त
ममनुहारिनकरै माननमानैआनि ॥मध्यमसमईअधम
निज अरथीनिलजानिदान५२९॥ उत्तमनायक यथा ॥ का
जरदीन्हेअरुणता भईबालदगमाहिं ॥ समुझिललाई
मानकी बिनैकरतहैनाहिं ५३० तियसखियनसोंरिसं

किये बैठीभौंहानितानि ॥ पीयसकतनहिंकहिसकत याते मुखतेआनि ५३१ ॥ मध्यमनायकयथा ॥ आवतहीतिय मानताकि कछूनबोलेलाल ॥ जबसिंगारसाजनलगी तब तेलालनिहाल ५३२ बिनुपानिपआदरनहीं रहैराखम नमाहिं ॥ सुमुखिरूपपानिपलिये मिलतिनारिसोना हिं५३३ ॥ अधमनायकयथा ॥ दईलाजबिसराइजिनलई कूरतासाथ ॥ दईदयोहैबांधिकै ताहिनिरदयाहाथ५३४ निलजनिठुरनिजआरथी जिहिनहिताहितचेत ॥ ऐसे लंगरसोंसखी बनैकौनविधिहेत५३५॥ मानीनायकचतुर नायकवर्णन ॥ मानीनायकचतुरको सबमेंअन्तरभाव ॥ तिनदुहूनकेकलककवि द्वैविधिकहतसुभाव ५३६ ॥ मानीयथा ॥ जिहिहितविनैअकोरदै करतहुतेकरजोरि ॥ तासोंलालकठोरह्वै कहारह्योमुखमोरि ५३७ ॥ मानी नायकभेद ॥ मानीकेहैभेदये द्वैविधिलजिजानि ॥ प्रथ मरूपमानीवरण गुणमानीपुनिआनि ५३८ ॥ रूपमा नीयथा ॥ खरीअँगाररहीसबै लखीनतुमइकबारि ॥ यहकारीअनुबारिमैं इतौनानिबिस्तारि ४३९ बारबा रहेरतकहा दरपणमोंचितलाइ ॥ नेकलखोनिजबदन में राधेबदनमिलाइ ५४० ॥ गुणमानीयथा ॥ अहोनि ठुरनिशिकितबसे इतीबातसुनिकान ॥ कछुयकनिशि करिआपुहारि कस्योबामसोंमान ५४१ ॥ चतुरनायक लक्षण ॥ निपुणहोयजोसकलविधि सोईचतुरबखान ॥ वचनचतुरहैएकअरु क्रियाचतुरपुनिजान ५४२ ॥ वचनचतुर यथा ॥ मिसकरिसबलसोंयोंकह्यो हरिराधिके

सुनाइ ॥ लैहौंपाहनसङ्गही तौतुवगाइसिलाइ ५४३ कैसीविधिचमकतहुती अम्बरमंयअभिराम ॥ लखी श्यामकोउकामिनी नहींदामिनीबाम ५४४ ॥ नायकस्व यंदूत ॥ चलीकहाकीजेकृपा सघनकुंजकीछाहँ ॥ भुव अकाशदोऊजरत जेठदुपहरीमाहँ ५४५ यहिअँधि-यारीमोंप्रिया मिलिचलियेकिनआइ ॥ हमसहाइतुम होइतुममुखद्युतिहमहिंसहाइ ५४६ ॥ क्रियाचतुरयथा ॥ विप्ररूपधरिसौंजुलै यमुनाकेतटजाइ ॥ हरिटीकोराधे बदन दयोसबनवहिकाइ ५४७ आजुलेरुवादेनमिस मोउठढिगकरिल्याइ ॥ उनचंचलयहअनछुई छतियां छुईबनाइ ५४८ ॥ प्रोषितनायक लक्षण ॥ जोतियनरन जुदेशतजि आनदेशकोजाइ ॥ तासोंप्रोषितकहतहैं जेप्रबीणकबिराइ ५४९ ॥ यथा ॥ कनकछरीशोभाभ री दामिनिदीपतिजाल ॥ अमृतबोलिजिवावनी मो तियविछुरीहाल ५५० जबतेतियतजिहौंपर्यो यहिवि देशमेंआइ ॥ तबतेइनबातियानसों जोजैहियदगलाइ ५५१ अग्निरूपबनिरहतकत जारतहैकतमोहिं ॥ ति यतनपानिपपाइके बोरिमारिहौंतोहिं ५५२ ॥ अनभिज्ञ नायक लक्षण ॥ जोसंज्ञासङ्केतको नेकनराखैज्ञान ॥ सो नायकअनभिज्ञहै यहवरणतकविजान ५५३ ॥ यथा ॥ हँसहँसायअरलायपुनि दुगुनचायकरिढैन ॥ ड्योढ़ी कामिनिसैनपै लखिमूरखक्षणसैन ५५४ ॥ रसप्रधानते चतुर्विधिनायककथनं ॥ रसप्रधानतेनामये नायकपावैचा रि ॥ जोरसजामेंअधिकहै तामेंतहांबिचारि ५५५ हो

तशृँगारप्रधानते धीरललितजगआइ ॥ भयेरुधिरकी आधिकई धीरउधितकहिजाइ ५५६ धीरप्रधानलहैक हो नायकधीरउदात ॥ धीरप्रधानसोजानजिहि रसर ससतकीबात ५५७ ॥ धीरललित ॥ भूषणबसनबनाय बो उज्ज्वलताप्रियमित्त ॥ बिषयलालसाजानिये धी रललितकेचित्त ५५८ ॥ धीरोधिता ॥ रोषघनोलघुदो षते गहिरोगरोअमर्ष॥ निजमुखयशअस्तुतिकिये धीरो धितकोहर्ष ५५९ ॥ धीरोदात ॥ दानदयासतमानशुभ काजनमेंउतसाह॥ प्रियाप्रेमयशधर्म्ममे धीरोदातहिचा ह ५६० ॥ धीरप्रधान ॥ तन्तुग्यानरुचिसन्तगुण धर्मा धर्मविवेक॥ सोईधीरप्रधानहै शय्याकीजिहिटेक ५६१

दिव्यादिकनायकलोकभेदतेकथनं। इन्द्रादिकयोग्यहैंमानुषजन अदिव्या ॥ अरजुनादियाजगतमें जानहुदिव्यादिव्य ५६२ ॥ नायककीगणना ॥ चारिभांतिपतिहैंबहुरि उप पतितीनिप्रमान ॥ द्वैवैसिकलीन्हेसकल नौविधिहोत निदान ५६३ उत्तमादिमेंगुनतसो सत्ताइसपुनिहोत॥ गुनेधीरललितादिमें हैंशतआठउदोत ५६४ गनेसक लजबभेदयह दिव्यादिकमेंजात ॥ तबचौबिसअरुती निसै सबनायकठहरात ५६५ जैसीबरणीनायका तैसे नायकनाहिं॥ जेवर्णनमेंउचितहैं तेईबरणेजाहिं ५६६॥

इतिनायकभेद। अथ दर्शनचतुर्विधि ॥ रतिआलम्बनहोत हैं दम्पतिदरशनपाइ ॥ यातेदरशननोधरो आलम्ब नयुतलाइ ५६७ सोदरशनग्रन्थनमते बरणतहैंकबि चारि ॥ श्रवणसपनअरुचित्रमें त्योंसौतुकनिरधारि

५६८श्रवणनहींदरशनबनै पैदीपतियुतिश्राइ ॥ यहर
तिश्रालम्बनकरत तातेबरणोजाइ ५६९ ॥ श्रवणदर्शन
उदाहरण ॥ जबतेमोहिंसुनायतू कहीकान्हकीबात ॥ त
बतेदृगस्त्रिगलौंचलै काननहींकोजात ५७० तूतियछ
बिमदजोदयो श्रवणचषककोप्याइ ॥ मोसोंहीश्रतिछ
कतिकै मैननभूलीश्राइ ५७१ ॥ स्वप्नदर्शनउदाहरण ॥
जागतजोरुजोपाइये दौरिलागियेसाथ ॥ सपनेकोचि
तचोरक्यों श्रावैश्रपनेहाथ ५७२ बामचोरटीकीकथा
कहियेकाहिसुनाइ ॥ जागेहूनहिंमिलतहै सुपनेगई
चोराइ ५७३ ॥ चित्रदर्शनउदाहरण ॥ चित्रहिचि
तवतिचित्रत्यों रहीएकटकजोइ ॥ मित्रविलोकति
रावरी कहोकौनगतिहोइ ५७४ निरखिनिरखिजि
हिचित्रहरि राखतहौहियलाइ ॥ तिहिदिखायकौनि
जगरे डारेपायबनाइ ५७५ ॥ सौतुकदर्शनउदाहरण ॥
खिनपियमनखिनपियामन निरखिजातयोंभोइ ॥ ज्यों
खिननदीजलसमुद्र नदिसमुद्रजलहोइ ५७६ ज्यों
पियदृगश्रलिभवततिय बदनकमलकीश्रोर ॥ त्योंपिय
मुखशशिलखिभये तियकेनैनचकोर ५७७ ॥इतिश्रृंगार
रसस्थाईश्रालम्बनसमाप्तम्॥श्रथश्रृंगाररसस्थाईउद्दीपनबर्णनं॥
श्रालम्बनमेंनायका नायकप्रथमबखान॥सखिदूतीश्रृ
तुश्रादिश्रब उद्दीपनमेंश्रान ५७८ ॥सखीलक्षण ॥रहै
सदाजोसंगश्ररु करैकाजसमश्रानि ॥ हितश्रनहित
कहुंनाकहै सोईसखीपहिंचानि ५७९ ॥ सखीचारिबिधि
कथनम् ॥ सखीचारिहितकारिनी विज्ञाविदगधल्याइ॥

अंतरंगिनीऔरपुनि बहिरंगिननसमाइ ५८० सखिन क्षणमैंकैसहूबहिरंगिनिनसमाइ॥अन्तरंगिनीजोरतेग्रंथ नबरणीजाइ ॥ ५८१ ॥ हितकारिणीसखीउदाहरण ॥ क्ष णबनाइभूषणवसन लखतिदिठौनाल्याइ ॥क्षणवारत धनशीशपै राईनोनबनाइ ५८२ चितचाहतअलिअंग तुव लहिदीपकपरिमान ॥ लैलैजनमपतंगको सदा वारियैप्रान ५८३ ॥ विज्ञानविदग्धयथा ॥गूँजलैनतूआ जुकत कुंजगईयहिकाल ॥ कंटकछतनखचाहिकै चष नचाहिकैबाल ५८४ लालरंगफीकोपस्यो लीन्होमनो निचोइ ॥ मिलैजोवारीसुमनयह तौवरनीकोहोइ५८५॥ अंतरंगिनीउदाहरण ॥ मनमोहनल्यावतिनहीं सोहनल्या वतिधाइ ॥ कारेयाहिडस्योनहीं कारेडस्योबनाइ५८६ सबैआपनेअर्थकी बिथानजानतकोइ ॥ प्यारीउरमेंपी रहै यतनकछूनाहिंहोइ ५८७ ॥ बहिरंगिनीउदाहरण ॥ पियदेखतहीकामते गह्योकम्पतियआइ ॥ शीतजानि अलिअग्निको ल्याईबेगजराइ ५८८ ॥ सखीकोकाम कथनं ॥ मण्डनाशिक्षादेनिअरु उपालम्भपरिहास ॥ सखीकाजयेचारिविधि बरणतबुद्धिनिवास ५८९ ॥ मंडनयथा ॥ सखीसवांरीभाँवतीनिजनिजकारजजानि॥ मालिनिलैपुहुपाभवन भईसामुहेआनि ५९० सखिन बनीहैकठिनतब भूषणकनकबनाइ ॥ बारबारहेरततऊ दृगनलख्योनाहिंजाइ ५९१ ॥ शिक्षाउदाहरण ॥ अपने घरबैठीरहो बाहिरदेउनपाइ ॥ डरियतहैचितवनिहरी हरीनतबमातिजाइ ५९२ जिहिदृगमेंदृगलगिभरी

अग्निहियेमेंआइ ॥ तिहितनपानिपमाहिंअबलीजैबेग बुझाइ ५९३ ॥ उपालंभयथा ॥ मोहिंनहींयहरावरी नोखीबानिसुहाइ ॥ बांधिरहीरिसिमिरिचसों शीलकपूर उड़ाइ ५९४ जिन्हैंआपनोजानतू ज्यायोअमृतप्याइ ॥ तिन्हैंमारियतबावरी बिषकेबाणचलाइ ५९५ ॥ परिहाससखीकोनायकसों ॥ नेवरपियछतलगनको सुख लीजोभरिपूरि ॥ अबहींदिनछुद्रावली बोलनकेअतिदूरि ५९६ लगेनखनलखिकैकह्यो करचलाइकुचहाल॥ नखकेसरलागतदई चषकेसरयहबाल ५९७ ॥ परिहाससखीकोनायकप्रति ॥ एकसखीइकछोहरे राधेरूपबनाइ ॥ रीतीमटकीशीशदै हँसीश्यामबहँकाइ ५९८ तियन मुकुटपटछीनिकै होरीऔसरजानि ॥ सबशृंगारलरीनके करेश्यामतनआनि ५९९ ॥ नायककोपरिहासनायकाप्रति ॥ चित्रबिचित्रनिचित्रतिलु दीन्होअधिकसुजान॥ चित्रऔरकोसुमतितिय कियोमित्रसोंमान ६००सोंधो लावतकंचुकी निजपियाचितयोबाल ॥ निरखतभाजे सकुचते डारिकंचुकीहाल ६०१ ॥ नायकाकोपरिहास नायकसों ॥ मुरलीआपुलुकाइके पूछतहैंब्रजनाथ ॥ कहतिहमारोहारहू धरयोहुतोतिहिसाथ ६०२ लाइबिरी मुखलालते खैंचलईजबबाल ॥ लालरहेसकुचायतब हँसींसबैदैताल ६०३ ॥ दूतीबर्णनम् ॥ मिलिनसकतजो तियपुरुषतिनमेंहितउपजोइ॥ छलबलआइमिलावईदूतीकहियेसोइ ६०४ परियेआवैऔरकेदूतीकहियेसोइ॥ अपनीपठईहोइजो बानदूतिकासोइ ६०५ ॥ दूतीत्रिविधं

भेदकथनम् ॥ अनसिखईसिखईमिलै सिखईकहैबखान ॥ उत्तममध्यमअधमयह तीनभांतिकीजान ६०६॥ उत्तमदूतीयथा ॥ जिहिमानिकसोंमनदियो आइतिहारेहाथ॥ तिहियहअपनेरूपहू चलिदरशैयेनाथ ६०७ शिरकलंककतलेतिमुख शशिनिकलंकीपाइ ॥ वहचकोरलै दिनभरत बिरहअंगारनखाइ ६०८॥ मध्यमदूतीयथा ॥ बेगिआइसुधिलेहुयह अलीकह्योघनश्याम॥ हौंदेख्यों बहचातकी रटतितिहारोनाम ६०९ ॥ अधमदूतीयथा॥ मोरकह्योकहियेउतै बनमालीकोपाइ ॥ नवलबेलिसी बेलिमा दिनप्रतिसूखीजाइ ६१० ॥ नायकबचनबानदूतीप्रति ॥ यमुनातटठाढ़ीहुती पहिरिनीलपटआइ ॥ वह घूँघटवारीमिलो जोजियकीरटलाइ ६११ मोहिंकहत घनश्यामजो सुनिलीजैयहबैन॥ बिनुलोपेउरदामिनी किहिविधिराखोंचैन ६१२ ॥ बानदूतीबचननायकप्रति ॥ कौनमानसीजिहिलिये एतोकरतउपाइ ॥ तिलमेंजाइ तिलोत्तमा नभतेमिलऊंल्याइ ६१३ ॥ बानदूतीभेदत्रिबिध ॥ हितकीअरुहितअहितकी अरुअहितोंकीबात॥ वहैसोहिताहिताहित अरुअहिताबिख्यात ६१४ ॥ हिताबानदूतीयथा ॥ कीजैसुखघनश्यामहौं आजपवनके रंग ॥ वहिचपलैचमकायहौं आजुतिहारेअंग ६१५॥ हिताअहिताबानदूतीयथा ॥समयपाइहौंदेउँगी प्यारीतुम्हें मिलाइ ॥ बिनुघनकैसेबीजुरी कहौदिखाईजाइ६१६॥ आतुरहौगुणलालअब यत्नकीजियोऔरि ॥बिनुफांदे मगमिलतनाहिं जोउरकीजैदौरि ६१७ ॥ अहिताबान

दूती ॥ लगतिबाततताकीकहा जाकोसलमलगात ॥नेक सासकेलगतही पासनहींठहिरात ६१८ श्याममधुप लौंजिनिफिरो वहचंपकलीसीनारि॥रसनहिंदैहैवेसहू मुखकीप्रीतिनिहारि ६१६ ॥ दूतीकेकाजकथनं ॥ अस्तु तिअरुनिंदाबिनय बिरहानिवेदननाइ ॥ अरुपरबोध मिलायबो दूतीजानसुभाइ ६२० ॥ नायकाकीस्तुति ॥ निजतनजलशायीकहति करिसमुद्रआगार ॥ तिनको मनपावतनहीं तुवतनपानिपपार ६२१ दिपतिदेहछ बिगेहकी केहिबिधिबरणीजाइ ॥ जिहिलखिचपलाग गनते क्षितिपरफरकतिआइ ६२२ कसाकिकसाकिपूछ तिकहा चसकिमसकिअनुमान ॥ खसकिजायगीटसकि यह नेकससाकिसुनिकान ६२३॥ नायककीस्तुति ॥ ति नकेरूपअनूपकी किहिबिधिकहियेबात ॥ जिनमोहन छबिमनधरे मनमोह्योसोजात ६२४ ॥ नायकाकी निंदा॥ कहाआपनेरूपकीफूलिकैरहीहाल ॥ तोहूँतेअतिआग री नगरनागरीबाल ६२५ ॥ नायककी निंदा ॥ शीश मुकुटकटिकाछनी फाटीसाटीहाथ ॥ मिलनचहतय हिरूपसों राधाजूकेसाथ ६२६ ॥ नायकासेबिनय ॥ कामिनिजिहिचितवतहुते पैदगबाणचलाय ॥ तेहि ज्यावनकोयत्नअब कीजैमुरिमुसुकाइ ६२७ ॥ नायक सोंबिनय ॥ जाहिबचायोमेहते करिगिरिवरकीछाहिं॥ ताहिश्यामजिनिजारियो बिरहानलभरिमाहिं ६२८ नायकाकोबिरहनिबेदन ॥ वाकेनैननिरावरी बसनिलुनाई जाइ ॥ लोनखारअंशुवानते पायोभेदबनाइ ६२९

कहाकहौंवाकीदशा जबखगबोलतराति ॥ पीयसुनत
हीजियतिहै कहासुनतिमरिजाति ६३० ॥ नायकको
बिरहनिबेदन॥ जबतेंआईतड़ितलौं नीलाम्बरमेंकौंधि ॥
तबतेहरिचकृतभये लगीचखनिचकचौंधि ६३१ परे
सूमअरुसरपकी एकैगतिदरशाइ ॥ धनिमनिबिछुरे
दुहुनको शीशधुनतनितजाइ ६३२ ॥ नायकाकोप्रबोध ॥
अबकीजैआनन्दयह बन्योंज्योंतअनयास ॥ तेरेमी
तरुकन्तकीदोऊअटारीपास ६३३ ॥ नायकाकोप्रबो
ध ॥ हरिचिन्तानाहिंकीजिये अपनेमनमेंल्याइ ॥ याहो
रीकेखेलमें गोरीमिलिहैआइ ६३४ ॥ दिपतिकोमिला
यबो ॥ रमणीरमणमिलाइयो दूतीरहतबराइ ॥ घनदा
मिनिकोजोरिकै ज्योंसमीररहिजाइ ६३५ ॥ इतिदूतीभे
द। अथनायकके सखा कथनं ॥ जोनायकसोंनायका नीके
मिलवैआनि ॥ नरमसचिवतिहिकोकहै सोईचारिविधि
जानि ६३६ ॥ तंत्रनामभेद ॥ पीठिमरादिबुधिबचनसों
मानहिंदेइमिटाय ॥ बिटजोजानतदूतपन कैसबकला
बनाय ६३७ चेटकहैवहजोकरै अवसरदेखिसुपास ॥
तौनविदूषकजोकरै दम्पतिसोंपरिहास ६३८ ॥ पीरम
रदयथा॥ हैकोईदेखतनहीं सकैजोयुवतिनआइ ॥ पिय
प्यारीतूकौनकी राखतिहैहरवाइ ६३९ कहाभयोहोंकह
तहौं कततूरहीरिसाइ ॥ तेरेकोपकरेकहो कोपकरेनहिं
पाइ ६४० ॥ बिटकोयथा ॥ श्वेतवसनतेजान्हिमें लाखि
नपरततवगात ॥ योंकहिबोल्योकामिनी आजुमिलन
कींघात ६४१ सखिनबीचजिनदीजिये मिलियेपियसंग

आइ॥ बामबामतानहिंतजै अरीपरेहूपाइ ६४२॥ चेटकको यथा॥ पियातियसखियनमेंलई जबैकामकीसेन॥ चलोबोलिहौंजातहौं देखनअपनीधेन ६४३ पियमधुकरतियनलिनको लख्योआनिजबदाइ॥ दुहूंमिलाय सखाचल्यो सांझसमयलैआइ ५४४॥ विदूषकयथा॥ रमणीरमणमिलापजब भयोकुंजकीओर॥ जाइआपही दूरिते बोल्योज्योंतमचोर ६४५ तबराधाकोल्याइकै हरिसोंदियोमिलाइ॥ तबधरियशुमतिरूपको हेरनलाग्यो गाइ ६४६॥ अथ उद्दीपनमेंषड्ऋतुमध्ये वसंतऋतुवर्णनं॥ कहलावताबिगसनकुसुम कहूँडोलावतवाइ॥ कहूँबिछावतिचांदनीमधुऋतुदासीआइ ६४७ यहमधुऋतुमेंकौनकेबढ़तनमोदअनंत॥कोकिलगावतहैंकुहुकि मधुपगुंजरततंत ६४८ औषधीशसंगपाइअरु लहिबसंतअभिराम॥ मनोरोगजगहरनको भयोधनंतरिकाम ६४९ फूलेकुंजनअलिभ्रमत शीतलचलतसमीर॥ भानजातकाकोनमन जातभानुजातीर ६५० सरवरमाहिंअन्हाइअरु बागबागीबरमाइ॥ मंदमंदआवत पवनराज हंसकेभाइ६५१कलपवृक्षतेसरसतू बागद्रुमनकोजान॥ सागरनिकसोसालिलकहँ जलजंतुनमिसिआन ६५२ ग्रीष्मऋतुवर्णनं॥ धूपचटककरिचेटकरि फाँसीपवन चलाइ॥ मारतदुपहरबीचमें यहग्रीषमढिगआइ ६५३ छूटतयेनलिनालजल सजिसजिक्षितितेआइ॥ देखिनिदाघअनीतिको चल्योभानुपैजाइ ६५४ कोऊउभरतउछरतकोउजलछिरकतआइ॥ लखिनारिनजलकेलि

छबिपियछकिरह्योबनाइ ६५५ पियछीटतयोंतियन क-
रलहिजलकेलिअनंद ॥ मनोकमलचहुंओरते मुकतिन
छोरतचंद ६५६ ॥ पावसऋतुवर्णनं ॥ पावसमेंसुरलोक
ते जगतअधिकसुखजानि ॥ इंद्रबधूजिहिऋतुसदाक्षि-
ति बिहरातिहैंआनि ६५७ सुमनसुगंधनसों सनेमंदमंद
चलिआइ ॥ प्रौढ़ालोंमनकोहरति हियलागिबरषाआइ
६५८ अरुणचीरतनमेंसजे योंबिहरतिहैनारि ॥ मानो
आईहैसुरी वसुधाहरीनिहारि ६५९ झूलिझूलितिय
सिखतिहै रागचढ़नकीरीति ॥ आजुकाल्हिमेंआइहै
सुरनारिनकोजीति ६६० ॥ शरदऋतुवर्णनम् ॥ चंद्रछत्र
धरिशीशमें लहिअनंगउपदेश ॥ कमलअंत्रगाहि जीति
जग लीन्होशरदनरेश ६६१ चन्द्रबदनचमकाइअरु
खंजननैनचलाइ ॥ सकलधराकोछरतयहशरदअप्सरा
आइ ६६२ दिनसोहतजलअमलहै निरमलकमल
अनूप ॥ निशिजोहतहीबादबदि हियमोहतशशिरूप
६६३ ॥ हेमंतऋतुवर्णनं ॥ दिननिशरविशशिलहतहै हे
मशीतकेयोग ॥ भरमचकोरनभोगहै कोकनभरसबि-
योग ६६४ हेमशीतकेडरनते सकतनऊपरिजाइ ॥ रह्यो
अग्निकोपाइकै धूमभूमिमेंछाइ६६५ ॥ शिशिरऋतुवर्णनं ॥
प्रकटकहतयाशीतमें रूखरूखकोपात ॥ बिछुरनकोशीत
हुधरे सुखतजातहैगात ६६६ माननकाहूकोरहत ल्याइ
दूतिकाघात ॥ सिलेदेतयाशिशिरकी सीसीसीकीबात
६६७ ॥ अन्यच्चउद्दीपन ॥ निकसतषटऋतुमेंवहुत उद्दी
पनयहपाइ ॥ यातेफिरिबरण्योनहीं इन्हेंभिन्नकरि

ल्याइ ६६८ धोमसेजरागादिमिलि यहउद्दीपनजान ॥
इहांकछूसंक्षेपते बरणनकीनोआन ६६९ ॥ अंगजसंभोग
उद्दीपन॥आलम्बनचुम्बनपरसमर्दननखरदजान॥येअं
गजसंभोगमेंउद्दीपनपरिमान १७०॥ इतिश्रृंगाररसस्थाईर
तिविभावसमासः ॥ अथअनुभावकथ्यते ॥ कहिविभावकोक
हतहौं अबअनुभावप्रकास ॥ जोहियतेरतिभावअनु
प्रकटकरैअन्यास ६७१ कटाक्षादिसोंचारिविधि अप
नेमनपहिंचानि ॥ तिनकोकवियहिभांतिसों बरणतहैं
जियजानि ६७२ काइकएकसोजानियेमानसदूजोहोइ॥
आहारजहैतीसरो चौथोसात्विकजोइ ६७३ करकीग
तिआदिकसोई काइकमानविशेषि ॥ मनकोमोदप्रकट
किये सोमानसअवरेषि ६७४ नृत्यसमाजबनावते
कृष्णगोपिकाज्ञान ॥ सोआहारजजानिये बुधजनकरत
बखान ६७५ बहुरोसात्विकहैसोई खेदादिकठहरात ॥
इनभावनकेभेदये चारिजानिअवदात ६७६ तनबिभ
चारिनविछतिहै येसबसात्विकभाव ॥ वाईपरगटकरत
हितगनेजातअनुभाव ६७७ नारीऔनरकरतहैंजोअन
भावउदोत ॥ तेवैदूजेऔरकोनितउद्दीपनहोत ६७८
अनुभावयथा ॥ श्यामसैनातियनैनलकि निसरिभीरते
आइ ॥ अधरआंगुरीधरिचली चितकीचाहाचिता
इ ६७९ मोमनभूल्योहैकहूं कोउनदेतबताइ ॥ मृगनै
नीदृगलखिहँसति इनहींपास्ठिहराइ ६८० दृगनजोरि
मुसुकाइअरु भौहैंदोउनचाइ॥ ओठनिआंठिबनाइयह
प्राणउमेठतजाइ ६८१ चितवतघायलकरिदियो

हायलकियोबनाइ ॥ फिरिहँसिमायलकीलली चली तरायलभाइ ६८२॥हावलक्षण ॥ हावअनुभावविवेकवर्णनं॥ समसंयोगश्रृँगारकी इहांकहीयतहाव ॥ अनुभवजानि विशेषिअरु येसामान्यसुभाव६८३ जहांबचनक्रमचेष्टा बरणतहैंकविलोइ॥ सोअनुभावरुहावहै तहांभेदयेजो इ ६८४ जोरतिभावप्रकटकरै सोअनुभावबखान ॥ रतिबढ़िवहैशृँगारपुनि हावहोतहैआन ६८५ बहुतहा वकछुहेतलहि होतनरनमेंआइ ॥ बरणेसहजसुभावल खि नारिनहींमेंल्याइ ६८६॥ लीलादिकहावदशवर्णनं॥ स्वभावकेलक्षणं ॥ सोलीलापियदेखितिय निजतनरा चैल्याइ ॥ वहविलासपियलखिकरै तियमनहरण सुभाइ ६८७ चितवनादिक्रियआभरण फबनिल लितहैसोइ ॥ रिसतेनिदरैभूषणानि छविविक्षिप्तहै सोइ ६८८ कपटानिरादरगरबते यहैबिवेकबिचारि ॥ पूरणहोवैचाहजिहि पियसंगबिहितनिहारि ५८९ मो टायितप्रकटैजोतिय ऐंठनादितेचाउ ॥ कलहकलैजो कलमैं सोईकुट्टमितहाउ ६९० किलकिंचितरोदनहँ सन रिसभयआदिगिनाइ ॥ सोविभ्रमउलटोतिया क रैजोकाजबनाइ ६९१॥ लीलाहावयथा॥ आजुराधिका आपको हरिकोरूपबनाइ ॥ ब्रजबनितनिकोलैगई ब्रज बनितनबहँवाइ ६९२ श्यामभेषबनिकैगई राधेकुंजन धाम॥भूल्योभेषचकितभई जितदेखेतितश्याम ६९३॥ विलासहावयथा ॥ दृगनजोरिअलसाइअरु भौंहनकोवि लसाइ॥कामिनिपियहियगोदमें मोदभरतसीजाइ ६९४

भौंहभ्रमाइनचाइदृग अरुअधरनमुसुकाइ ॥ पियहि अनन्दबढ़ाइतिय चलीमन्दगरवाइ ६९५ ॥ ललित हावयथा ॥ रमनीतूअंखियनचितै अरुअधरनमुसुकाइ ॥ मदअनमददोऊदये निजप्रीतमकोप्याइ ६९६ ज्योंपद भूषणकेसजे अंगअंगछबिहोति ॥ त्योंभूषणतेह्वैरही पटभूषणकीजोति ६९७ ॥ बिक्षिप्तहावयथा ॥ बिनास जेभूषणनके कहाहोतहैनारि ॥ बिधिकेसजेशृंगारसो तू नहिंसकतिउतारि ६९८ श्यामलालइनातिलकतुव यह रंगकीन्होबाल ॥ सौतिनकोरंगश्यामदै रंग्योश्यामको लाल ६९९ चाहनहींभूषणनकी तुवअंगनिसुकुमार॥ हियोभुलावनहारहै तौंहियभूलनहार ७०० ॥ बिब्बो कहावयथा ॥ बातहोइसोदूरिते दीजैमोहिंसुनाइ ॥ कारेहाथनजिनगहो लालचूनरीआइ ७०१ ज्योंज्योंछकि छकिनेहते पगनपरतहैलाल ॥ त्योंत्योंरूखीयेपरतिको तुऋछकेरसाल ७०२ ॥ बिहितहावयथा ॥लखिनसकति तियनैनभरि धरीसखिनकीआनि ॥ पीपरभावरतनभरै पीपरिभावरिप्रानि ७०३ बातकहतहरिसोंभई यहतिय कीगतिआज ॥ ज्योंज्योंखोल्योमदनमुख त्योंत्योंमूंद्यो लाज७०४ ॥ मोटायितहावयथा ॥ श्यामविलोकतकामते भ्योयहबामसुभाइ ॥ करनखुजाइउठाइकर अंगिरानीज मुहाइ ७०५ ॥ द्वितीयमतेविहितहाववामोटायितहावभेदलक्षणम् ॥प्रकटभयेचितचावतिय पियसोंकरैदुराव॥ ताहिवि हितकोऊकहैकोऊमोटायितहाव ७०६॥बिहितहाव मोटा यितहाव यथा ॥ श्यामाबिलोकतकामते भयोकम्पजोबा

म ॥ शीतनामलैलाजते बैठिगईतितबाम ७०७ ॥ कुट्ट मितहाव यथा ॥ खिनकुचमसकतिखिनतजाति खिनमुख लखतिबिशेखि॥छकतिभयोपियतियहँसाति उचकतिसि सकतिदेखि ७०८ किहिबिधितिहिउरलाइयत जाकीप करतिबांह॥ एकसीकरनमैंछयोअंगसीकरनमांह ७०९॥ किलकिंचितहाव यथा ॥ शिवशशिकेशिरमैंशिवा तकि निजछांहभ्रमाइ ॥ डरिछकिरोईबहुरिहँसि हँसीआपको पाइ ७१० ॥ बिभ्रमहाव यथा ॥ बैठीअरुणकपोलदै लाइ दिठौनाभाल ॥ इहिबिधिकिहिमनहरणयहचलीनचेली बाल ७११ ॥ पुनः बोधकादिदशहावस्वभावकलक्षण ॥ सैनबु झावैकरिक्रियाबोधककाहियेसोइ ॥ मौंगधसोइपहिंचा नियै तियाअयानीहोइ ७१२ हँसतसरसरसउमगते पियढिगतियमुसकान॥ रूपतरुणतागासते गरबसोई मदजान ७१३ कौनहुहितसन्तापतिय होइतपनहैसो इ॥ सोबिछेपमगनेभये हानिगानकीहोइ ७१४ चकि तसुऔचिकचौंकिबो कछुअचरजकोदेखि ॥ पियहिरि झावैकेलिरचिसोईकेलिअवरेखि ७१५ कौतुकराचिबन उठिचलै कौतूहलसोंगाइ ॥ बातनकोबिस्तारजहँ उ द्दीपनकहिताइ ७१६ ॥ बोधकहावयथा ॥ मांगबीचधरि आंगुरी ढांपिनीलपटभाल ॥ अर्द्धनिशासीछपतहीसैन बताईबाल ७१७ पियकीचाहसखीकही फूलसुदरशन लाइ॥ उत्तरदीन्होनागरी जीतीफूलदिखाइ ७१८॥ मौं गधहावयथा ॥ अधिकअयानीबिनचली खेलिखेलिपिय साथ॥कौनलतासोमुकतिमानि लागतहैकहुंनाथ७१९॥

हसितहावयथा ॥ सखिनडरीमुखमोरिकै निजसुहागसु
खपाइ ॥ बारबारअंगरानिसो भागभरीमुसकाइ ७२०॥
मदहावयथा ॥ रूपगरबयौबनगरब औरमदनकेजोरि ॥
बालदृगानिमेंमदभरी आवतचलीहिलोरि ७२१ ॥ तपन
हावयथा ॥ जेसुहागभूषणसजे तियपियसुनतपयान ॥
तेजरिकंचनक्कैगिरे उपजतबिरहकृशान ७२२ गईयाम
युगयामिनी श्यामनआयेधाम ॥ ठामठामतबबामक्कै जा
रनलाग्योकाम ७२३ ॥ विक्षेपहाव उदाहरण ॥ सिगरीचि
तवनिहैखरीनगरीतेंनडराति ॥ गगरीभारिबोछांड़िकै तू
कतडगरीजाति ७२४ ॥ चकितहावउदाहरण ॥ घनगरजत
चकचौंधियों डरीनारिगहिनाह ॥ जिमिदामिनिआति
कौंधिकै दुरैश्यामघनमाह ७२५ ॥ केलिहावउदाहरणं ॥
फगुवामिसितियछीनिपट अचरजकियोबनाइ ॥ नटनि
दैनिचलिफिरनिमें दीन्हेश्यामनचाइ ७२६ ॥ कौतूहल
हावउदाहरणं ॥ अंगशिंगारतकान्ह सुनि योंदौरीवहबाल॥
कहुँबिंदुलीकहुँउरबसी कहूँगिरोवनमाल ७२७ ॥
उद्दीपनहावउदाहरण ॥ हहाश्यामबेनीतजो बेनीतजियत
बाम॥ कौनअकामहिकरतहो प्यारीयहतोकाम ७२८॥
तीनहावमनोभववर्णनं ॥ हावभावहेलातिहूँ मनतेउपजेजा
न ॥ दुरेप्रकटआतिरिसभरे तीनोंलीजैमान ७२९ ॥
भावलक्षण ॥मनकीलगनजोपहिलहीसोकहियतहैभाव॥
चतुरसहेलीजानिइति येकैदेखिसुभाव ७३० ॥ भाव
यथा ॥ मनऔरेसेक्कैगयो रहीनतनमेंछाज ॥ मोहीयो
लागतकहूँ मोहीहैतूआज ७३१ मोईहैअँसुवानतेरही

अरुणताछाइ॥ काहूइनतुवदृगनिमेंनेहदयेंहैनाइ७३२॥ हावलक्षण ॥ दृगअंचलहेरेंहँसे बोलैमीठेबैन ॥ प्रेमचातुरीजरवयुत हावकहतहैंऐन ७३३ ॥ हावयथा ॥ चलतसांकरीखोरिमें हरितनपरसतबाल ॥ बदनमोरिकछुबोलिकै हँसीलोलतकिलाल ७३४ तौबसंतकोऊ नहीं अनितखेलहैबाल ॥ मुखगुलाबकुचअरगजाजो गहिलाबोलाल ७३५ ॥ हेलाहावउदाहरण ॥ चितवनि बाणचलाइअरु हासकृपाणलगाइ॥ उरजगुरजपियहि यहनै भुजफाँसीगरलाइ ७३६ ॥ सातहावऐजनयेबर्णनं ॥ स्वाभाविककाहिबीसअरु कहेमनोभवतीन ॥ बातऐज नजजानिके अबबर्णतरसलीन ७३७ ॥ रूपप्रकाशतेचतुर्विधिस्वाभाविकलक्षण ॥ रूपराशिसीभवनिको शोभयब रणैजान ॥ अंगझलकिअरुबिमलता सोईकांतिप्रमान ७३८ कांतिहिकोबिस्तारसो दीपतिचितमैंल्याउ ॥ अतुलरूपकीमधुरता सोमाधुरजगनाउ ७३९ ॥ शोभाउदाहरण ॥ जितदेखततुवअंकदृग तितसुखलहतअपार॥ मानोलीन्हींरूपही नखशिखतेअवतार ७४० एक सखीकरलैछरी हरतिचकोरनधाय ॥ एकभौंरकीभीर सोंमारतचौरढुराय ७४१ ॥ कांतिउदाहरण ॥ मुकुरबिमलताललहिगहे कमलमधुरताबास ॥ तौतुवतनकेमिल नकी सुबरणराखैआस ७४२ अमलहियेधनकीपरी लालआइयहछांह ॥ जानिआपनीउरबसी कतभरमत मनमांह ७४३ ॥ दीपतियथा ॥ चंदछानिबिधिमुखरचे तनचपलासोंठानि ॥ तापरिउपधारेखरी तौतुवपूजे

आनि ७४४ ॥ मासरजयथा ॥ कुमतिचंद्रप्रतिद्यौस बढ़ि मासमासकढ़िआइ ॥ तुवमुखमधुराई लखैफीको परिघटिजाइ ७४५ बिनुशिंगारतूमधुरई प्राणदेतघटि आनि॥मानोबिधियहतनरच्योशुद्धसुधासोंसानि७४६॥ द्वितीयमतेशोभाकांतिदीपतिकोलक्षण ॥ यौबनतेजोउपजई शोभाताहिबिचार ॥ जोकछुउपजैमदनते सोई कांतिनिरधार ७४७ कांतिहिकेबिस्तारको दीपातिजिय मेंजानि ॥ तिनिहूँकेअबकहतहौं उदाहरणकोआनि ७४८ ॥ कांतिउदाहरण ॥ ज्योंज्योंमनमथआइउर मन दधिमथतबनाइ ॥ त्योंत्योंमदघृतबिदितह्वै ठौरठौरउतराइ ७४९ ॥ दीपतिउदाहरण ॥ हावभावप्रतिअंग लखि छबिकीझलकनिशंक ॥ भूलतज्ञानतरंग सब करमनछालकुरंग७५० ॥ प्रगल्भताधीरतबिनयकोलक्षण ॥ प्रगल्भतायौबनगरब चलैहँसैनिरशंक ॥ पतिब्रताअरु प्रेमदृढ़सो धीरतकोअंक ७५१ बिनयनवनजोशील युतरिसमेंरसअधिकाइ ॥ अबवरणतहौं तिहुँनकेउदाहरणकोल्याइ ७५२ ॥ प्रगल्भतायथा ॥ केसरआड़लिलारदे बिनाआड़चलिआइ॥टाड़टौनसोमारियह चाड़ भरीमुसुकाइ ७५३ निकसितियनकेजालसों मुख तेघूँघटटारि ॥ अरीहरीमतइनहरी फूलझरीसोंमारि ७५४ ॥ धीरतायथा ॥ कितेसत्तऋषिलौंफिरत चहुँदिशि धरिधरिप्रेम ॥ तऊनध्रुवलौंतजतियहथिरताईकोनेम ७५५ हनिहनिमारतमदनशर बैरतियनसोंठानि ॥ तऊ सुभटलौंमनडराहिं पकरिखेतकुलकानि ७५६ कतमारत

मुहिंआनिनित रेमनमथमतिहीन॥ मनतोमैंपियबदन तजिमख्योनद्वैहैलीन ७५७ दीपतिहारेनेहको बरणत रहिहियमाहिं ॥ बातचहूँदिशिकीसहै बूझतकैंसेहुनाहिं ७५८ ॥ बिनययथा ॥ बालयहैजगमाहिं जियबालनग होसुभाइ ॥ शीशचढ़ायेहूसदा नैंनैपरसतपाइ ७५९ पियअपराधजनाइ सखिकितोसिखावतमान ॥ शील भरोतियदृगतऊतजतनअपनीबान७६०॥ औदारजलक्षण॥ इकबरणतहैंविनयताजि औदारजकोआनि ॥ ताहू कोलक्षणसुनो अबहौंकहतबखानि ७६१ महाप्रेम रसबसपरे औदारजकहिताहि ॥ जीवनतनधनला जकी जहांनहींपरवाहि ७६२ ॥ औदारजयथा ॥ यह मतिराधेकीभई सुनिमुरलीकीतान ॥ तनकहँधनकहँला जकहँ देनचहोतबप्रान ७६३ दईजुतुमबनमालसोहिये लाइवहिबाल७६४॥ हावगनन ॥स्वाभाविकजेबीसअरु मनोभवत्रयअभिराम ॥ लहतसातस्वाभावमिलि अलं कारयहिनाम ७६५ अलंकारनारीनकेदीनेतीसगनाइ॥ लैकेग्रन्थनकोमतो तेराखहुचितलाइ७६६॥ इतिभावहा वसमाप्तम्॥ अथअनुभावमधिव्यभिचारीवर्णनम् ॥ कहिअनु भावनहावहू बरणेतिहिसँगआनि ॥ अबव्यभिचारिन कोकहों सोद्वैविधिपहिंचानि ७६७ तिनद्वैभेदनमाहिंजे तनव्यभिचारीआहि ॥ लहिअनुभावप्रसंगको पहिले बरणोताहि ७६८ तिनहींव्यभिचारीनको सात्विकक हियेनाम ॥ कहिलक्षणतिनकेकहों उदाहरणअभिराम ७६९ ॥ अथतनव्यभिचारीसात्विकलक्षणं ॥ सुखदुखआ

दिजुभावना हृदैमाहिंकछुहोइ ॥ सोबिनबस्तुनप्रगटैसा त्विककहियेसोइ ७७० सन्तशबदप्राणीकह्यो जीवतदे हनिहारि ॥ ताकोजोकछुधरमहै सोसात्विकनिरधारि ७७१ येप्रगटतथिरभावको अरुयेहैतनभाइ ॥ यातेंक बिइनकोगनै अनुभावनमेंल्याइ ७७२ भेदशिंगारनभा वअरुसात्विकमेंयहजानि ॥ वैप्रगटतरतिभावये सबथा इनकोआनि ७७३ दूजोयहअनुभावअरु सात्विकभेद उदोत ॥ वैबिनुबशतेहोतहैं येनिजुबशतेहोत७७४ सोई सात्विकआठहैं यहजानतसबकोइ ॥ तिनकोबरणनकर तहौं सबग्रन्थनिमतजोइ ७७५ सातोसात्विकनामते लक्षणप्रकटलखाइ ॥ आठौंलक्षणप्रलपको अबदेहौं समुझाइ ७७६ ॥ स्वेदयथा ॥ घनआवतजेआदिही च लतस्वेदतनआइ ॥ यौंआवतयहकान्हके श्रमजलरही अन्हाइ ७७७ बामलखततनश्यामको कस्योस्वेदयों आइ ज्योंतरपतिहीबीजुरी वरषतमेघबनाइ ७७८ ॥ अ स्तंभयथा ॥ हरिकेदेखतहीकहा थकितभयोतुवगात ॥ रहीरईलैहाथमें दहीमथ्योनहिंजात ७७९ पागसजत हरिदृगपरी जूरेबाँधतबाम ॥ रहेपेचकरमेंपरे औार पेचमेंश्याम ७८० ॥ रोमांचयथा ॥ हौंतोहीपरआ नियह लखीअपूरबबात ॥ जितमारतपियफूलति तहोतकटीलोगात ७८१ कानभयोरीमानयह जिन अपनेमनचेत ॥ रोमरोमतेतनउठ्यो तबआदरकेहेत ७८२ ॥ सुरभंगउदाहरण ॥ छकितकस्योमोप्राणतुवनहिं नाहिंहियठहिराय ॥ मानोनिकसतहैसुरा सीसीमुखतें

आइ ७८३ अबहींतुमगावतहुतेभईकौनपरबात ॥ सुर-
तरंगकेलेतकत सुरतभंगह्वैजात ७८४ ॥ कम्पयथा ॥
लख्योनकहुँघनश्यामअरु बोलसुन्योनाहिंकान ॥ कहां
लगीतूबेलसी बातचलतथहिरान ७८५ तनधनचंदन
बदनशशि द्युतिशीतलतापाइ ॥ आजुअंगब्रजराजके
कम्पभयोहैआइ ७८६ ॥ बिबरणयथा ॥ कारोपीरोपट
धरे बिहरतधनमनमाहिं ॥ यातेनिर्मलगातमें कारीपीरी
छाहिं ७८७ पद्मनिलखिरसलैनिहित अतिअनंगसर
साइ ॥ मधुपरीतिहरिबिदनपै भईपीतताआइ ७८८ ॥
आंशूयथा ॥ पियलखिनहिंतियचखनमें सुखआँशुवाठहि
राइ ॥ आपनयेशीतलहियो शीतलकरतबनाइ ७८९
परतबालमुखछाहिंके दृगनरूपमेंआइ ॥ हरिकेसुखआँ
शुवा चलेंपारदलौंउफनाइ ७९० ॥ प्रलापकोलक्षण ॥
होतहरषदुखआदिते नष्टचेष्टाज्ञान ॥ सुधिनहिताहित
कीरहै सोइप्रलापपहिंचान ७९१ ॥ यथा ॥ तबतेसु
धिनशरीरकी परीबालबेहाल ॥ जबतेआयेहैंलपटि
कारे लौंडसिलाल ७९२ डरतनहींकछुअग्निते जलते
नहिंसियराति ॥ राधेदेखतहीभई यहमतिहरिकेसाति
७९३ ॥ आठौंसात्विकके दोहामेंउदाहरण ॥ पियतकिछकि
अधबरण काहिपुलकस्वेदतेछाइ ॥ ह्वैबिबरणकंपतिगिरै
तियआँशुवाठहिराइ ७९४॥ इतितनव्यभिचारीसमाप्तम्॥
अथतंतीसमनव्यभिचारीकथनं ॥ बरणेतनचरभाइअब ब
रणोंमनचरभाइ ॥ जेथायिनकेहोतहैं नितसहकारी
आइ ७९५ रहतसदाथिरभावमें प्रकटहोतयहरूप॥

जैसेआनिसमुद्रते निकसतलहरअनूप ७९६ फिरत रहतसबरसनमें इनकोयहैस्वभाव ॥ जारसमेंनीकोजु है तैसोतहांबनाव ७९७ पहिलेदैनिर्वेदको थायीमाहिं गनाइ ॥ पुनिअबराख्योआनियह ब्यभिचारिनमेंल्याइ ७९८ तत्त्वज्ञानबिरहादिते जहँजगकोअपमान ॥ और निदरबोआपनो सोनिर्वेदप्रमान ७९९ निजरस पूरण होनलौं थायीजानिउदोत ॥ गयेरौद्ररसमेंवहै ब्याभिचारीपुनिहोत ८०० त्योंहींचिंताआदिजेधरेदशा दशमाहिं॥गयेऔरठौरनवहैब्यभिचारीकैजाहिं ८०१॥ निर्वेदलक्षण ॥ ध्यानशोचआधीनता आंशूश्वास उश्वास ॥ उठिचलिबोसरबसतजी येअनुभावप्र कास ८०२ ॥ निर्वेदयथा ॥ यहजियआवतहैअली तजिसबजगतेआस ॥ बनमालीकिलखनको बनमें लीजैबास ८०३ कतरोकतस्वहिंआइकै कछुबिवेकहै तोहिं ॥ श्यामरूपआगेकहो कौनदेयहैमोहिं ८०४ ॥ गिलानलक्षण ॥ रतिगतादितेंनिबलता नहिंसँभारसो गिलान॥क्षीणबचनकम्पादिते जानलेतहैंजान८०५॥ यथा ॥ नयेशङ्कयेगनतहै रतिहीमाहिंविलास ॥ कहूं सुन्योकाहूलई मालीपुहुपसुबास ८०६ छीजतहूमींज तकुचन रीझतमूठिबनाइ ॥ आलीवानरहाथमेंपस्यो नारियरजाइ ८०७ ॥ दीनतालक्षण ॥ दुखदारिदविर हादिते होतदीनताआनि ॥ मनसोंबचहाहाकरत तन मलीनताजानि ८०८ ॥ यथा ॥ हरिभोजनजबतेदये तेरेहितबिसराइ ॥ दीनभयोदिनभरतहै तबतेहाहा

खाइ ८०९ तुवडरभाजिवनवनफिरत अरिनारीबिल
खाइ ॥ जबपरपतिलागतहुते अबयेकंटकआइ ८१० ॥
शंकालक्षण ॥ निजतेकछुअवगुणभये कैचवावकछुदेखि॥
उपजैशङ्काजानियेइतउतलखनविशेखि ८११ ॥ यथा॥
शङ्काहूहैजबलख्यो तुम्हैंवाहिमुसकात ॥ तबतेजाने
जगतमें होतमेरियेबात ८१२ ॥ त्रासलक्षण ॥ त्रास
भावप्रकटैसदा घोरदरशसुधिपाइ ॥ स्तम्भकम्पधक
धकहुते तनमेंहोतजनाइ ८१३ ॥ यथा ॥ हँसतिहँस
तितियकोपकै पियसोंचलीरिसाइ ॥ निरखिकिनारीत
रपको डरपिगईलपटाइ ८१४ देशदेशकेपुरुषसब च
लतरावरीबात ॥ योंकांपतिज्योंबाततें रूखरूखकेपात
८१५ ॥ आवेगलक्षण ॥ अरिदर्शनउतपातलहि मित्र
शत्रुजहँहोइ ॥ सोअवेगखेलनतपन विभ्रमभ्रमतेहो
इ ८१६ ॥ यथा ॥ परीहुतीपियपासतहिं गईसासुकहुँ
आइ ॥ सटपटाइसकुचाइतिय भाजीभवनडराइ ८१७
सुनितुवदलअरितियनकी ऐसीगतिदरशात॥भजतिगि
रतिगिरिफिरिभजति भजिभजिगिरिगिरिजात ८१८॥
गर्वलक्षण ॥ जोकाहूअधिकारते अहंकारमनहोइ ॥ पर
निदरेतेलखिपरे गर्वकहावैसोइ ८१९ ॥ यथा ॥ प्रीत
मपठईबिंदुली सोलिल्लारचमकाइ ॥ सौतिनमेंबैठीति
याकछुऐंठीसीजाइ ८२० ॥ अँशुवालक्षण ॥ परगुणद्र
व्यविलोकिके होतआँशुवाआनि ॥ योगकथनउपवच
नते प्रकटलीजियेजानि ८२१ ॥ यथा ॥ कमलाहरिके
उरबसे लह्योउर्वसीनाउँ ॥ यहगुणराधेउरबसी बैठीबाँधे

पाउँ ८२२॥ अमर्षलक्षण ॥ उपमानादिकते कछूकोपआव
सुअमर्ष॥कहियतबचनकठोरतहँबढ़ैतापघटहर्ष८२३॥
यथा ॥जोदासीकेबंशभये जगकहायब्रजराज॥ तिनकीये
बतियांकरत तुम्हैंनआवतलाज ८२४ कहाकहोंमोप्रभु
नहीं दीनोशासनमोहिं ॥ नातररेराकसकछूहौंदिखावतो
तोहिं८२५॥ उग्रतालक्षणं॥अपराधिकतेजोहियोजोनिरद
यताहोइ॥सोईउग्रताजानियोतरजनताड़नहोइ ८२६ ॥
यथा ॥ शीशफूलजेहिलालको सौतिनकरेबनाइ ॥ तेहि
राखौंगीआजुहौंपायलमाहिंलगाइ८२७ ॥ उत्सुकतालक्ष
ण ॥ सहिनसकैजोकालगंति उत्सुकतातिहिजान॥ उपजे
औधिबिभावसो बिकलाईतेमान ८२८ ॥ यथा ॥ पति
यापठवनकहिगये सोनाहिंपठईलाल ॥ ताहीकीअव
सेरमें बिकलभईहैबाल ८२९ दिनअवसेरतहीगयो
नहिंआयेब्रजराज ॥ सजनीअबजियजातहै यारजनी
केसाज ८३० ॥ स्मृतिलक्षण ॥ लखैबसनमणिगणचितै
फिरिवाकीसुधिहोइ ॥ कैसुधिपूरबअर्थकी अस्मृतिक
हियेसोइ ८३१ हरषसहितअबलोकिबो भौंहनको
संचार॥ शिरकंपनअँगुरीनतेतरजनअरुभोचार८३२॥
यथा ॥ निकसतहीपटनीलते तेरेतनकीज्योति॥ चपला
अरुघनश्यामकी हियेआनिसुधिहोति ८३३ यमुनातट
मोसों कहीतूजुबातमुसुकात ॥ सदारहतचितपरचढ़ीभू
लिहुबिसरनजात८३४॥ चिंतालक्षण ॥ अनपायेप्रियबच
नको ध्यानमाहिंबितजाइ ॥ सोचिंताजहितापअरु आँ
शूश्वासलखाइ ८३५ दृगनमूंदिभौंहनजुरै करपैराखक

पोल॥कौनशोचमेंबैठितिय इहिबिधिभईअडोल ८३६॥ तरकलक्षण ॥ कहियेतरकबिचारिके संशयतासुविभाव ॥ शिरचालनभृकुटीचपल ताकोहैअनभाव ८३७ संशय नहींबिचारिमें इतित्रयअध्योसाइ ॥ चौथोबिप्रतिपत्तमें चारितरकसमुदाइ ८३८ ॥ संशयआत्मकतर्कउदाहरण ॥ मनमोहनछबिलखतहीं भूलिगईसबऐंठि ॥ अबजग गतिलाख्योकहै हौंभूलीकीपैंठि ८३९ ॥ बिचारात्मकतर्क उदाहरण ॥ बोलतहैंइतकागअरु फरकतनैनबनाइ ॥याते यहजान्योपरत प्रीतमामिलिहैंआइ ८४० ॥ अध्याशायात्मकविप्रतिपत्यात्मकलक्षण ॥ करिबिचारमेटैसकलसोईअ ध्योशाइ॥ परैनजहँपरतीतिसो बिप्रातिपत्यबनाइ८४१॥ अध्योशायात्मकतर्कउदाहरण ॥रच्योकामयहमुकुरकै कमल भयोअविदात॥किधौंचन्द्रभुवअवंतरयोकछुजान्योनाहिं जात८४२॥ विप्रतिपत्यात्मकतर्कउदाहरण॥ अनिलज्वाल नाहिंकहिसकत करतशीतयहअंग ॥ कलाशरदशशि कहोतो दिनतेकौनप्रसंग ८४३ ॥ मतिलक्षण ॥ ज्ञान यथारथकोजहां तहँकहियेमतिभाव ॥ आगमशोचबि भावअरु शिष्यादिकअनुभाव ८४४ ॥ यथा ॥ कोऊबर ऐपुरुषयश कोऊबरऐबाम ॥ सुकबिसकलताजिकैसदा बरणतहैहरिनाम ८४५ धर्मनीतिप्रभुप्रीतियुत साधु प्रीतितहँहोइ ॥ चितहितपरउपकारमें गानजानियेसो इ ८४६ ॥ प्रीतलक्षण ॥ धृतकाहियेसंतोषको सत्या तासुविभाव ॥ दुखकोसुखकरिमानई धीरजादिअनुभा व ८४७ ॥ यथा ॥ हास्योमदनचलाइशर शशिकरशे

लगाइ॥यहपिककरिरीतीकहूँ कहाडरावतआइ ८४८ कौननवावतजगतको फिरैआपनेमाथ ॥ बांधदईहैजी विका दईजीवकेहाथ ८४९ ॥ हर्षलक्षण ॥ हर्षभावपि यबसतलखि मनप्रसादहूजोइ ॥ मनप्रसन्नपुलकादि लहि जानतहैसबलोइ ८५० ॥ यथा ॥ तियघटभरिउम ड्योहरष योंभेंटतनंदलाल ॥ ज्योंबर्षतहीश्यामघनज लभ्मिहरतभरिताल ८५१ होतएकहीभवनमें आनँदज नमेनन्द॥रामजन्मतेचौदहौभुवनभयोआनन्द ८५२॥ ब्रीड़ालक्षण ॥ जोकाहूकीआनिते होतढिठाईहान ॥ म खनावनआदिकजहां ब्रीड़ालीजैजान ८५३ ॥ यथा ॥ पियकछुबाचनतेदिया तियतेलयोमंगाइ ॥ मुखछबिल खिइतयेछके उतवहमुरीलजाइ ८५४ सखिनसंगखे लतहुती ठाढ़ीसहजस्वभाय ॥ पियआवतऔचकचि तै बैठिगईशिरनाय ८५५ ॥ अवहिथालक्षण ॥ समगो पनव्यवहारको सोअवहीथाभाव ॥ हैविभावहियकुटि लइव हीलावनअनुभाव ८५६ ॥ यथा ॥ सौतिशृंगार विहारितियघूंघटपटमुखल्याइ ॥ खांसीकोमिसठानिके हांसीरहीदुराइ ८५७ ॥ चपलतालक्षण ॥ रागद्वेषआदि कनके होतिचपलताआइ ॥ कियेशीघ्रताआदिते तन मेंहोतिलखाइ ८५८ ॥ यथा ॥ इततेउतउततेइतहि चमकिजातबेहाल॥ दिखबेकोघनश्यामको भईदामिनी बाल८५९॥ श्रमलक्षण ॥ रविगतिकेअतिबलकिये खेदहो तजोआइ॥सोईश्रमस्वेदादिजोमनमेंहोतलखाइ८६०॥ यथा॥निजकांधेतियबांहधरितियकटिधरिनिजबांह॥मंद

मंदसाखिसेजतेल्यावतमंदिरमांह ८६१ तनतोरतिनासा
चढ़ै सीसीभरिश्रँगिरानि ॥ श्रंगदबावतबालको दाबि
लेतमनश्रानि ८६२ ॥ निद्रालक्षण ॥ सोनिद्राजोइन्द्रि
यन तजिमनतुचासश्राइ ॥ श्रमश्रादिकतेहोतलखि
स्वपनादिकतेजाइ ८६३ ॥ यथा ॥ क्षणएकहोततनमेंपु
लिक क्षणश्रधरनमुसकान ॥ यातेश्रथतियकोपराति
पियसँगसोवनजान ८६४ स्वपनेमेंमिलिलालसों रही
बाललपटाय ॥ बांहचलावतिभुजगहति बिहँसनिदेति
जनाय ८६५ ॥ स्वप्नलक्षण ॥ तुचहंतजिमनयमपुरी बसै
सोस्वप्नबखान ॥ होतनींदतेपरतहै श्वासादिकतेजान
८६६ ॥ यथा ॥ नैनमूंदिबीसुधिपरीसोवतिबालबनाइ ॥
सांसछरीकेवलरही बेसरिमुकुतिनचाइ ८६७ ॥ वैपथल
क्षणं ॥ वैपथजागिविजानिये नींदछुटेतेहोइ ॥ दृगमूंद
नश्रँगरानश्ररुजिभ्यादिकतेजोइ ८६८ दृगनमूंदिश्र
लसायपुनि श्रंगमोरश्रँगराइ ॥ बामजागहूश्यामतन
दीनोकामजगाइ ८६९ पियश्राहटलाखिबालदृग यों
युगउघरेप्रात ॥ ज्योंरविद्युतिसन्मुखलखे मुंद्योकमल
खुलिजात ८७० ॥ श्रालस्यलक्षण ॥ व्याधिखेदगर्वादि
ते श्रालसउपजैश्रानि ॥ उठबेकीसामर्थ्यता तेमनली
जैजानि ८७१ ॥ यथा ॥ तियलावतहीतेलपिय प्या
लोलियोउठाइ ॥ गर्भभारतेउठतिनाहिं मांगतिहाहाखा
इ ८७२ कौनछकोछबिसोमरी यहऐंड़ानिविशेखि ॥
श्ररुमगढीलीडगभरन श्ररसीलीकीदेखि ८७३ ॥ मदल
क्षण ॥ मदिराविद्याद्रव्यते यौबनश्रायेगात ॥ उपजत

हैमदहावतिह कढ़तअलसगतबात ८७४ ॥ यथा ॥ क्षणकरहतिकरलैचखक क्षणमुखरहतिलगाइ ॥ आप करतिमदपानपै छकवतिपीकोजाइ ८७५ जबतेकामिनिकान्हके तकेमदभरेनैन ॥ तबतेवैबिनुमदछके छके रहतरसऐन ८७६ ॥ मोहलक्षण ॥ मदभयआदिविभावते चितजोबेचितहोइ ॥ वहैमोहअज्ञानतातेलहियत हैसोइ ८७७ ॥ यथा ॥ लकुटिगिरीछुटिहाथते मुकुटपरयोभुकिपाइ ॥ मोहनकीयहगतिकरी राधेबदनदिखाइ ८७८ ॥ उन्माद लक्षण ॥ द्रव्यहानिबिरहादिये हैउन्मादबिभाव ॥ बिनबिचारआचारअरु बौराईअनुभाव ८७९ ॥ यथा ॥ क्षणरोवतिक्षणबाकिउठति क्षणगाहितोरतिमाल ॥ यमुनाकेतटजातयहभयोबालकोहाल ८८० ॥ अपस्मारलक्षण ॥ यक्षरक्षग्रहभूतअरु भयदुखआदिविभाव ॥ अनुभववेपथफेनमुख अपस्मारकोभाव ८८१ ॥ यथा ॥ कहाबजायोवेनुयह नारिनकोजियलेन ॥ फरफरातक्षितिवहपरी मुखमेंआयोफेन ८८२ कतदिखाइकामिनिनको दामिनिकोयहबांह ॥ थरथरातिशीतनफिरै फरफरातिघनमांह ८८३ ॥ जड़तालक्षण ॥ ज्ञानघटैअरुगतिथकै निरनिमेषरहिजाइ ॥ प्रियअप्रियदेखैसुनै सोईजड़ताभाइ ८८४ ॥ यथा ॥ पियलखियोंलागतअचल तियदृगतारेश्याम ॥ मनथिरह्वैबैठे भवँर कमलनिकोकरिधाम ८८५ बाटचलतिननदी कह्यो कहांगिरीतूमाल ॥ हियेऔरतकिचकितह्वै थकितह्वैरहीबाल ८८६ ॥ बिषादलक्षण ॥ चाह्योहोइनअंन

चह्यो भयेदेखिदुखहोइ ॥ सोबिषादअनुभावतिहि ती नभांतिजियजोइ ८८७ उत्तमदृढ़ह्वैकैहिये शोचैकछुक उपाय ॥ मध्यमजोअनमनकिये ढूंढ़ैकोउसहाय ८८८ अधमबदनअतिसूखके पीरोहोइनिदान ॥ भरिभरिलै तउश्वासअरु करैभागअपमान ८८९ ॥ यथा ॥ चली श्यामपैबामतहँ मिलीननदिपथआइ ॥ यहशोचति किहिछन्दछलि हरिसोंमिलियेजाइ८९० ॥ व्याधिलक्षण॥ कामकलेशभयादिते व्याधिज्वरादिकहोइ ॥ करचरण नकोफेरिबो धरिदहादिकहोइ ८९१ ॥ यथा ॥ निरखि निरखितियकीव्यथा थकितभयेसबलोग ॥ समुझनप रतवियोगहै कैकछुडाख्योयोग ८९२ अरीबामछबिश्या मकी योंपर्यंकलखाइ ॥ मानोकागजपैलिखी मसिकी लीकबनाइ ८९३ ॥ मरणलक्षण ॥ कछुकव्याधिवाघात ते मरणहोतहैआनि ॥ दृगमूंदनश्वासाजलन हिक्काते रहिजानि ८९४ ॥ उदाहरण ॥ तरफितरफितुवखेतमें तुवबैरिनकेलोग ॥ कोऊमरैकोउमरतको कोऊमरिबेयो ग ८९५ ॥ इतिव्यभिचारीभावसमाप्तम् । अथशृङ्गारवर्णनं ॥ कहिविभभावबिभावपुनि अनुभावरुचिरभाव ॥ अथव र्णनशृङ्गारघन जिहिसुनिबाढ़तचाव ८९६ ॥ शृङ्गाररस लक्षण ॥ लहिविभावअनुभावचर भावजबैरतिभाव ॥ पूरणप्रकटेरसकहत तिहिशृँगारकबिराव ८९७ पहिले उपजतपरस्पर दीपतिकेरतिभाव ॥ ऋतुआदिकउद्दी पनते पुनिचितबाढ़तचाव ८९८ पुनिरतिहीतेआइकै प्रंकटहोतअभिलाख॥ पुनिप्रकटतअभिलाषते चिंता

यहमनराख ८९९ चिन्तातेप्रकटतसकल मनव्यभि
चारीआइ॥तिनकोसहकारीकहैं कबिमनमेंठहराइ ९००
जबगतिकरिअनुभावको बाहरदेतलखाइ ॥ तबनिक
सतहैसङ्गही येसहकारीआइ ९०१ बेमनमेंरतिभावको
ज्योंसबकरतसहाव॥रतिअनुभावनसहकरति त्योंइनके
अनुभाव ९०२ भावजबैअनुभावतें येसहकारीआनि ॥
तबअतिपरमटकारतें रतिकोयहजियजानि ९०३ पूर
णह्वैरतिभावजबयहिबिधिप्रकटैआइ॥ताहीमेंमनमगन
भो रसशृंगारकहिजाइ ९०४ ॥ रसशृंगारउदाहरण ॥
मोहनमूरतिश्यामकी कामिनिदेखिलुभाइ ॥ रीझ
छकीमोहीजकी रहीएकटकलाइ ९०५ पियतननि
रखिकटाक्षसों योंतियमुरीलजाइ ॥ पासआइमुसु
काइकै अतिदीनतादिखाइ ९०६ नेहजनाइबनाइ
हरिमोमनलियोलुभाइ ॥ ताक्षणतेउनबिनसखी ना
कछुऔरसुहाइ ९०७ ॥ शृंगाररसभेदकथनं ॥ क
हैसँयोगबियोगगहि द्वौशृंगारसबलोग ॥ मिलन
कहतसंयोगअरु बिछुरनकहतबियोग ९०८ जातुसँ
योगदरसपरस बाहरकीजोरीति ॥ दंपतिहियकेमोद
को करिसंयोगअतीति ९०९ ॥ संयोगशृंगारयथा ॥
निजचावनसोंबैठिकै असमुखलेतनवीन ॥ दोऊतन
पानिपनमें दोऊकेदृगमीन ९१० लैरतिसुखबिपरीत
ज्योंरचीप्रियाअरुमीत॥दोऊनूपुरपरिभईइकरसनाकी
जीत ९११॥ मिलनस्थानवर्णनं ॥ सखीसदनसूनेसदन
उपवनमिलनसनान ॥ औरठौरहू्ह्वैसकत दीपतिमि

लनसयान ६१२ ॥ सखीस्थानकोमिलबो ॥ कान्हबनाइ कुमारिका सखीगेहमेंल्याइ ॥ चोरमिहचुनीतेंदई लै राधिकेमिलाइ ६१३ ॥ सूनेसदनकोमिलबो ॥ धनसूने घरपाइयो हरिलीनीउरलाइ ॥ सूनेगृहलहिलेतहैं ज्यों धनचोरउठाइ ६१४ ॥ उपवनकोमिलबो ॥ फिरतिहु तीतियफूलके भूषणपहिरिअतूल ॥ हरिलखिउपवन फूलमें भईऔरहीफूल ६१५ ॥ बिपिनकोमिलबो ॥ हरि कोलखिकैराधिका ठहराईयहभाइ ॥ मनुतमालतरुको गई पुहुपलतालपटाइ ६१६ ॥ स्नानकोमिलबो ॥ दोऊसरवरन्हातअरु फिरिफिरिचुभुकीलेत ॥ परसि लहरजलपरसपरसुरतिपरमसुखदेत ६१७ चुभकी लैलैमिलतअरु उठतदूरिनितजाइ ॥ धरसिकम्प रोमांचइन्हि दुखोसरोवरन्हाइ ६१८ ॥ बियोगश्रृंगा रउदाहरण ॥ इतलखियतवहातियनहीं उतलखि यतनहिंपीय ॥ आपसमाहिंदुहूनमिलि पलटगयेहैं जीय ६१९ ॥ बियोगश्रृंगार भेदकथनं ॥ पुनिबियोगशृंगा रजो दीनोहैसमुझाइ ॥ ताहीकोइनचारिविधि बर्णतहैं कबिराइ ६२० इकपूर्बाअनुरागअरु दूजोमानबिशे खि ॥ तीजोहैपरवासअरु चौथोकरुणालेखि ६२१ पूर्बानुराग लक्षण ॥ जोपरिलैसुनिकैनिरख बढ़ैप्रेमकी लाग ॥ बिनमिलापजोबिकलता सोपूर्बाअनुराग ६२२ यथा ॥ होइपीरजोअंगकी कहियेसबनसुनाइ ॥ उप जीपीरअनंगकी कहीकौनबिधिजाइ ६२३ ॥ पूर्बानुराग मध्यसुता नुरागयथा ॥ जाहिबातसुनिकैभईतनमनकीगति

आन ॥ ताहिदिखायेकामिनी क्योंरहिहैमोप्रान ६२४
पूर्वानुराग मध्यवृष्टानुराग उदाहरण ॥ आपहिलागिलगा
इहग फिरिरोवतयहभाइ ॥ जैसेआगिलगाइकोउ ज
लछिरकतहैआइ ॥ ६२५ हियेमटकियामाहिंमथि डी
ठरईसोग्वारि ॥ मोमनमाखनलैगई देहदहीकोडा
रि ६२६ ॥ मानमेंलघुमानउपजबेको उदाहरण ॥ औरबा
लकोनामजो लयोभूलिकैनाह ॥ सोअतिहीबिषब्याल
ज्यों छयोब्यालहियमाह ६२७ ॥ मध्यमान उदाहरण ॥
पियसोहनसोहनभई भवरिसधनुषउतारि ॥ रसकृपाण
मारनलगी हँसिकटाक्षसोनारि ६२८ ॥ गुरुमान उदाह
रण ॥ पियदृगअरुणचितैभई यहतियकीगतिआइ ॥ कम
लअरुणतालखिमनों शशिद्युतिघटैबनाइ ६२९ लहि
मूंगाछनिदृगमुरनि यहमनलह्योप्रत्यक्ष ॥ नखलायेति
यअक्षइन पियनछपायेपक्ष ६३० ॥ गुरुमान छुटबेकोउ
पाय ॥ श्यामजुमानछुटाइये समताकोसमुझाय ॥ जो
मनाइयेदैकछू सोहैदानउपाय ६३१ सुखदैसकलसखी
नको करिकैअपनीओर ॥ बहुरिछुड़ावैमानसो भेदजा
निसबठोर ६३२ मानसुचावइवानताजि कहैऔरपर
संग ॥ सोईउपेख्याजानिये बर्णतबुद्धिउतंग ६३३ उप
जैजिहिसुनिव्यतिक्रमकहियेइहिबिधिबात॥सोप्रसंगबि
ध्वंसहै बर्णतबुधिअवदात ६३४ जोअपनेअपराध
सों रूसीतियकोपाइ ॥ पांइपरेतिहिकहतहैं कबिजनप्र
णतउपाइ ६३५ ॥ सामोपाय उदाहरण ॥ हमतुमदोऊए
कहैं समुझिलेहुमनमाहिं ॥ मानभेदकोमूलहै भूलिकी

जियेनाहिं ६३६॥ दानोपाय उदाहरण॥ इनकाहूसेयोनहिं पायसेवतीनाम ॥ आजुकाल्हिबनिचहततुव कुचसंव सेयोवाम६३७पठयेहैंनिजकरनगुहिलालमालतीफूल॥ जिहिलहितुवहियकमलते कढ़ैमानअतितूल ६३८ ॥ भेदोपायउदाहरण॥ लालनमिलिदैहितुनसुख दहियेसौं तिनप्रान ॥ उलटीकरहिनिदानजिन करिप्रीतमसोंमा न६३९ रोषअगिनकीअनलते तूजिनजारैनाह ॥जि हितरुवरदहियतनहीं रहियतजाकीछाह ६४० ॥ उपे क्षाउपायउदाहरण॥ बेलीचलिविटपनामिली चपलाघन तनमाहिं ॥ कोउनहींक्षितिगगनमें तियारहीतजि नाहिं ६४१ ॥ संगविध्वंसउदाहरण ॥ कहतपुराणजु रैनिको बितवतिहैकरिमान ॥ तेसबचकईहोहिंगी अ गिलेजन्मनिदान ६४२ ॥ प्रणतउपायउदाहरण ॥ पिय तियकेपांयनपरत लागतयहअनुमान ॥ निजमित्रन केमिलनको मानहुआयोभान ६४३ पांवगहतयोंमान तिय मनतेनिकस्योहाल ॥ नीलगहतज्योंकोटके निक सजातकोतवाल ६४४ ॥ अपरअंगमानछुटबेकीविधि ॥ देशकालबुधिबचनपुनि कोमलधुनिसुनिकान ॥ औरो उद्दीपनलहे सुखहीछूटतमान ६४५ ॥ अथपरवासविरह लक्षण ॥ तृतियवियोगप्रवासजो पियप्यारीद्वैदेश॥जा मेंनेकसुहातनाहिं उद्दीपनकोलेश ६४६ ॥ यथा ॥ नेह भरीहियमेंपरी अग्निविरहकीआइ ॥ श्वासपवनकी आइकै करिहैंकौनबलाइ ६४७ शिवामनावनिकोगई विरहिनपुहुपमँगाइ ॥ परसतपुहुपभसमभये तबदौंशि

बहिचलाइ ६४८ ॥ करुणाविरहलक्षण ॥ शिवजारयो
जबकामतब रतिकियअधिकविलाप ॥ जिहिविलाप
महँतिहिसुनी यहधुनिनभतेआप ६४६ ॥ द्वापरमेंजब
होइगो आनिकृष्णअवतार ॥ तिनकेसुतकोरूपधरि
मिलिहैतुवभरतार ६५० यहसुनिकैजोविरहदुख रति
कोभयोप्रकास ॥ सोईकरुणाविरहसब बर्णतबुद्धिनिवा
स ६५१ पुनियाहूकरुणाविरह बर्णतकविसमुदाय ॥ सुख
उपायनारहैजिय निकसनकोअकुलाय ६५२ जासों
पतिसबजगतसो पतिसोंमिलतनआइ ॥ रेजियजीबो
विपतको क्योंयहतोहिंसुहाइ ६५३ सुखलैसंगजिहि
जियतज्यों पियानरक्षककाज ॥ सोऊअबदुखपाइकै च
लोचहततहैआज ६५४ ॥ वियोगश्रृंगारदशदशाकथनं ॥
धरयोवियोगशृंगारमें कविजोदशादशल्याइ ॥ लक्षणस
हितउदाहरण तिनकेसुनोबनाइ ६५५ मिलनचाहउप
जैहिये सोअभिलाषबखान ॥ पुनिमिलिबेकेशोचको
चिंताजियमेंजान ६५६ लखैसुनैपियरूपको सुमिरैसुमि
रणसोइ ॥ पियगुणरूपसराहिये वहैगुणकथनहोइ
६५७ सोउद्वेगजोविरहते सुखददुखदह्वैजाय ॥ बकै
औरकीऔरजो सोप्रलापठहिराय ६५८ सोउन्मादजो
मोहते व्यथाकाजकछुहोइ ॥ कृशतातनुपियराइअरु
तापव्याधिहैसोइ ६५६ जड़तावर्णतअचलजहँ चित्र
अंगह्वैजाइ ॥ दशमदशामिलिदशमदश होतविरहते
आइ ६६० ॥ अभिलाषउदाहरण ॥ अतिह्वैहैंबहुदोषज्यों
पियबिदेशतेआइ ॥ व्यथापूंछिसबविरहकी लैहैंअंग

लगाइ ६६१ जेहिलखिमोहूंसोंबिमुख भैचकोरद्वैनैन॥
रोविधिक्योंहूंपायहौं तेहितियमुखलखिचैन ६६२ ॥ चिंता उदाहरण ॥ इतमनचाहतपियमिलन उतरोकतहैला
ज॥ भोरसांभकोएकक्षण किहिविधिबनैसमाज ६६३
कौनभांतिबहुशशिमुखी अमीबेलिसीपाइ॥ बैननैनबु
झाइकै लीजैअंगलगाइ६६४॥ सुमिरण उदाहरण॥ खट
करहीचितअटकजो चटकभरीबहुआइ॥ लटकमटक
दिखरायकै सटकगईमुसकाइ ६६५ कहाहोतहैबासिर
हे आनदेशकैअन्त॥ तोमैंजानोहौंजोबसो मोमनमेंक
हुकन्त ६६६ चन्द्रानिरखिसुमिरतबदन कमलबिलोक
तपाइ॥ निशिदिनललनाकीसुरति रहीलालदृगछा
इ ६६७ बिछुरनक्षणकेदृगनमें भरिअंशुवाठहरान॥ अ
रुससकतिधनगलगहनकसकतिहैमनआन ६६८ यापा
घसऋतुमेंकहो जीजैकौनउपाय॥ दामिनिलखिसुधिहो
तिहै वाकामिनिकीआय ६६९॥ गुणकथन उदाहरण॥ दि
नदिनबढ़िघटिआइकत देतमोहिंदुखद्वन्द॥ पियसुखश
ठकरिहैनतू अरेकलंकीचन्द ६७० जिहितनचन्दनब
दनशशिकमलजमलकरिपाइ॥ तिहिरमणीगुणगणग
नत क्योंनाहियेसियराइ ६७१॥ उद्वेग उदाहरण ॥ जरत
हुतीहीअग्निते तापैचन्दनल्याइ॥ बीजनपवनडुलाइ
इनि दीन्होअधिकजराइ ६७२ कमलमुखीबिछुरतभये
सबैजरावनहार॥ तारायोंचिनगीभई चन्दाभयोअँगा
र ६७३॥ प्रलाप उदाहरण ॥ श्यामरूपघनदामिनी
पीताम्बरअनुवारि ॥ देखतहीयहललितछबि मो

हहनतकतमारि ६७४ तुवबिछुरतहीविरहयह कि
येलालकोहाल ॥ पपिहाबोलतयहकहत मोहिंपु
कारतबाल ६७५ ॥ उन्मादउदाहरण ॥ क्षणचूंबति
क्षणउरधरति बिनदृगराखतिश्रानि ॥ कमलानिकोतिय
लालके श्राननकरपगजानि ६७६ कमलइसनमुखध
रतवह पुलकततनलपटाइ ॥ लैश्रीफलहियमेंगहतसु
नतकोकिलनजाइ ६७७ ॥ व्याधिउदाहरण ॥ विरहतची
तनदूबरीयोंपटपंखलखाइ ॥ मनुसितघनकोसेजकैदामि
निपौढ़ीश्राइ ६७८ मनकीबातनजानियत श्ररी
श्यामकोगात ॥ तोसोंप्रीतिलगाइकै पीतभयेजिनजा
त ६७९ ॥ जड़ताउदाहरण ॥ नेकनचेततश्रौरबिधि
थकितभयोसबगाउँ ॥ मृतकसजीवनमन्त्रहै वाहि
तिहारोनाउँ ६८० तुवबिछुरतहीकान्हके यहगति
भईनिदान ॥ ठाढ़ेरहतपषाणसे राखैमोरपषान ६८१
दशमदशाउदाहरण ॥ बिदितश्रहैयाजगतमें वर्णिगयेप्रा
चीन ॥ पियबिछुरेसबसरतहैं ज्योंजलबिछुरेमीन ६८२
पातीवर्णन ॥ व्यथाकथालिखिश्रंतकी श्रपनेश्रपनेपीय ॥
पातीदेहैंश्रौरसब हौंदेहौंयहजीय ६८३ पियबिन
दूजोसुखनहीं पातीकेपरिमाण ॥ याचतमाचतमोदत
न बाँचतबाँचतप्राण ६८४ नैनदेखिबेकोचहैं प्राण
धरनकोहीय ॥ लहिपातीभगरोपस्यो श्रानिछुड़ावैपी
य ६८५ ॥ संदेशोवर्णन ॥ पकरिबांहाजिनकरदई विरहशत्रु
केसाथ ॥ योंकहियोवानिठुरसोंऐसेगहियतनाथ ६८६
योंकहियोवानिठुरसों यहगतिमेरीजाइ ॥ जिनछुड़ाइ

निजअंगते दईअनङ्गमिलाइ ६८७ ॥ अथवियोगमय बारहमासावर्णनं ॥ प्रथमचैत्र ॥धनुषबाणदोऊनये देफूलन केचैत ॥ जैतवारसबजगतको कियोकामकमनैत ६८८ श्यामसंगजिहिकेसुनत बाढ़तमोदतरङ्ग ॥ सोविहंग धुनिकरतया चैतमाहिंचितभङ्ग ६८९ ॥ वैसाखवर्णनं ॥ लाखयतनकहिराखिये करैजारितनराख ॥ शाख शाखजोढाखकी फूलरहीबैशाख ६९० पुहुपरूपइनि द्रुमनिमें आगिलगीहैआइ ॥ जामेंजरियेभवँरस ब कारेभयेबनाइ ६९१ ॥ बसंतसमीरवर्णनं ॥ प्राण नाथबिनुआइइन कोराखैगहिहाथ ॥ पवनप्राणकोगो तगिनि लियेजातनिजसाथ ६९२ ॥ ज्येष्ठवर्णनं ॥ ब्यं जनलैकरमेंधरति बाहरदेतिनपाइ ॥ वृषआतपबिन श्यामघन दासीकस्योबनाइ ६९३ जेठपवनकरिगवन यह दीनीअवनिजराइ ॥ बिनाश्यामघनदवनसहिकेहू भवननजाइ ६९४॥ आषाढ़वर्णनं ॥ हाथशरासनबाण लैमघवाशासनमानि ॥ मनभावनबिनुप्राणइन सावन लीनेआनि ६९५ ज्योंसागरसरितालता द्रुमनलगाई अंग॥ त्योंसागरमिलवतक्यों सोतनभावमिसंग ६९६ भादौंवर्णनं ॥ भादौंकेदिनकठिनबिन यादवमोहिंसहाइ॥ तापैक्षणदाकीताड़ित क्षणाक्षणदागतिआइ ६९७ रीदा सिनिघनश्यामामिल कतमोसनमुखआइ ॥ इहनलगी हैसौतिलौं अपनीचटकदिखाइ ६९८॥कुवारवर्णनं ॥ कुम त्तिभयेहैंपितृसो वेऊआवतधाम ॥ तिहिकुवारमेंजायकै अन्तबसेहैंश्याम ६९९ आजुकलंकीचन्द्रयह दोषाको

सँगपाइ।दिनसीज्योनिकुवारकीजीमारातिहैआइ १००० कार्त्तिकबर्णनं ॥ सबैप्रभातअन्हानकोयहकातिकमेंन्हात ॥ मैंअपनेअंशुवानिसों बाढ़ीसदाअन्हात १ और देतहैंदीपसब जिनकेकन्तसमीप ॥ इनवारेहरिनेहनोरों मरोममेंदीप २ ॥ अगहनबर्णनं ॥ अन्तकहैयहआपने लीपनकाजानिदान ॥ आयोअगहननामधरि गहन तियनकेप्रान ३ कठिनपर्य्योहैअवधिलौं अबतनरहिबोसास ॥ प्राणसंगहरिलैगये मासरहतहरिआस ४ पौषबर्णनं ॥ भानुतेजसबतेसरस जगतमाहिंदरशाइ ॥ सोऊजानिधनराशिमें छप्योशीतडरपाइ ५ शीतअनीतनिहारिकै तजीप्राणतेआस ॥ मित्रहोतधनराशिमें जोनमित्रधनपास ६ ॥ माघबर्णनं ॥ माहशीतयहमीत बिनु करिअनीतलपटाइ ॥ यातेनिशिदिनअग्निमें तनशोधतहीजाइ ७ माघमासलहितेतही यहदुखभयो अनन्त ॥ क्योंबसन्तअबखेलिहैं बसेअंतहैंकन्त ८ फाल्गुनबर्णनं ॥ भागभरीअनुरागसों हिलिमिलिगावतराग ॥ मोहिंअभागिनिफागहीबिधिदीन्होबैराग ९ मनमोहनाबिनबिरहते फागरच्योइनचाल ॥ पीरोरँगअंगनछयो अँशुवनझरतगुलाल १० ॥ अथ सामान्य शृंगार अरु मिश्रितशृंगारबर्णनं ॥ नहिंसंयोगबियोगजहँ ज्योंपियबैठेद्वार ॥ तहँसामान्यशृँगारहै कबिजनकियोबिचार ११ जहँसंयोगमेंबिरहके बिरहमांझसंयोग ॥ तहँमिश्रितशृंगारकहि बर्णतहैंकबिलोग १२ सौतुकअरुसपनेनिरखि सुनिपियबिछुरनवात ॥ दम्पतिकोनितआइकै सुखमेंदु

खक्वैजात १३ त्योंहींसगुनसँदेशअरु पातीहूकोपाइ॥ अनुरागनको बिरहमेंहरषहोतहैआइ १४ उदाहरण इनदुहुनके निजमनमेंअवरेखि ॥ गमिष्यतिपतिका माहिंअरुआगमिष्यतिमेंदेखि १५ ॥ वाक्यभेद ॥ तिय पियसोंपियतीयसों तियसखिसोंसखितीय॥सखिसखि सोंसखिपीयसों कहैसखीसोंपीय १६ कहुँप्रश्नोत्तरहो तकहुँ प्रश्नोत्तरकहुँहोइ ॥ सोतिनिसंभुवैहोततिहि वा कपतीनिधिजोइ १७ ॥ इतिशृंगाररससमाप्तं ॥ अथहा स्यरसआदिआठौरसवर्णनं॥ कहिशृँगारअबकहतहैं आठौ रससबल्याइ ॥ जिनतेपूरणहोतहैं नवरसगिनतीआ इ १८ ज्योंथायीसबरसनकी न्यारीन्यारीहोत ॥ त्यों आलम्बनहूँसदाभिन्नभिन्नउद्दोत १९ आलम्बनअं कितविषे उद्दीपनक्वैजात॥ बहुरिहोतअनभावहू भिन्न भिन्नअविदात २० सात्विकतमचरभावको सबतेअनु भवजान ॥ मनब्यभिचारिनकोसदा सहकारीपहिंचा न २१॥ हास्यरसलक्षण ॥ परिपोषकजोहँसीको सोईहा सरसजान॥बिकृतबचक्रमसंगतेनितउपजतहैआन २२ मुखअनुनतप्रसन्नता तेअनुभावविशेख ॥ ब्रह्मदेवति हिकहतकवि बर्णश्वेतअविरेख २३ बातकहतापियभूलि फिरि लीन्होबर्णसँभारि ॥ प्राणबसीसुनिकैकछू मनमें हँसीविचारि २४ ॥ हास्यत्रिविध ॥ दशनखुलतनहिंमंद में धुनिमध्यममेंदोइ ॥ बहुहँसिबोअतिहासमें हासती निबिधिजोइ २५ ॥ मन्दहास्यउदाहरण ॥ ग्वालिनवेष बनाइहरि मिलेतियनमेंआनि ॥ गरुयेमनतबचितव

सी हरुवेहितपहिंचानि २६॥ मध्यमहास्यउदाहरण॥ भूलि
चलेजबपीतपट तबसुजाइढिगलाल ॥ हमैंदयोयहब
चनकहि बलधुनिसोंहँसिबाल २७॥ अतिहास्यउदाहरण॥
खाइचुनौतीकोगयो पाननमेंजबलाल ॥ देखतहीतब
हँसिपरी खिलखिलायकैबाल २८ ॥ करुणारसलक्षण॥
परपोषकजोशोकको सोकरुणारसहोइ ॥ इष्टनाशबि
पतादिसब येबिभावजियजोइ २९ भ्रमनपतनविपतन
स्वसन जानिलेहुअनुभाव॥ यमसोदेवताकहतहैं बर्णक
पोतसहाव ३० ॥ शोकथातीभावकोउदाहरण ॥ बिनुतुव
दलसन्मुखभये अरिनारीबिलखाइ ॥ करुणबीजउरमें
बये आगेहीतेल्याइ ३१ ॥ करुणारसउदाहरण॥ तुवअरि
शोकनतियलई श्वासअरानिहगवार ॥ कहुँगाहतवन
कोफिरै जोहतकहूंपहार ३२ बिलखिकहतिमन्दोदरी
गाहिदशमुखकोगात ॥ बीसकरणहूँराखितुम सुनतनमे
रीबात ३३ सोइजागिबोआपनो मोनैननकेसाथ ॥
लैसबइनकीनींदको सुखसोयेतुमनाथ ३४ ॥ रौद्र
रसलक्षण ॥ परपोषकजोकोपको वहैरौद्ररसजान ॥ दु
सहबैरबैरीलखन योबिभावपहिंचान ३५ कंपधरम
आवेगप्रति बरमअंशुअनुभाव ॥ रुद्रदेवताजानिये
बरणअरुणचितचाव ३६ ॥ कोपथायीभावकोउदाहरण ॥
पियऔगुणसुनिजोजग्यो रिसअंकुरमनआइ ॥ सो
बिनुबढ़िनिकसेअधर गुणमुखतेनलखाइ ३७॥ रौद्ररस
उदाहरण ॥ निरखतजावकभालपर पावकसीह्वैबाल ॥
अपनेहियतेतोरिके पियहियदीन्हीमाल ३८ मुकुतासेल

नपंथही गहिगहिकोधनसत्थ ॥ मींजिबालकाहाथते क रतजातदशमत्थ ३९ ॥ बीररसलक्षण ॥ परपोषकउत्साहकी सोइबीररसलेख ॥ पूरबकीअसमर्षता सोबिभावअबिरेख ४० उग्रताइअरुप्रश्नता पुलकादिक अनुभाव ॥ जानदेवताइंद्रको गौरबरणतिहिगाव ४१ उत्साहथायीभावकोउदाहरण ॥ सत्यदयारणदानको जब अवसरनियराइ ॥ उदयकरतहैदरहिये हरषआगेही आइ ४२ ॥ बीररसउदाहरणचतुर्विधि ॥ बीरचारिजग प्रकटभे सत्यदयारतदान ॥ धर्मतनयशिवरामबल इत्यादिकतेजान ४३ प्रकटजेचारोबीरजे चारिपुरुष कोपाइ ॥ सोचारोपूरणभये दुरतनमनमेंआइ ४४ ॥ सत्यबीरउदाहरण ॥ तिनशिरनायेपगनपर जिनजिनधरी मरोरि ॥ कस्योनबीनोजगतसब एकसत्यकेशोरि ४५ हैदरतेजीतैनकोउ यहजानतसबकोइ ॥ धरमहितेजय होतहै पापहितेक्षयहोइ ४६ भज्योबहत्तरबारजो युद्ध माहिंमुखमोरि ॥ हैदरनेमुखबोलिहित दियोराजतिहि छोरि ४७ ॥ दयाबीरउदाहरण ॥ घेरिलियेसुलैमानजब गराजिसिंहचहुंओर ॥ शाहनशाहउमाहसों लियबचाइ बरजोर ४८ ॥ रणबीरउदाहरण ॥ ज्योंसुभटनसँगचलत है हैदरधारिउछाह ॥ ज्योंनारिनसँगआइके होरीखेलत नाह ४९ जिहिखैबरतेजाइके आयेसबमुखमोरि ॥ हैदरनेतिहिद्वारको बिहँसतडास्योतोरि ५० निकसनिते अरिअंगको हाथतिहारोपाइ ॥ नेजाकीपोरीरही सबैहोड़सीलाइ ५१ तुवदलचढ़तकँपनजगत अस्त्र

शस्त्रगिरिजात ॥ ढूँढ़तअगमअखंडगढ़ लखिन कीनयहबात ५२ ॥ दानबीरउदाहरण ॥ तिनहैदर केदानको कोकरिसकैशुमार ॥ जोपरिरितिचितचाव सों बिकेबहत्तरबार ५३ ॥ भयानकरसलक्षण ॥ परपो षकभयभावको सोईभयानकजान ॥ बसतघोरधुनिघोर लहिसदाहोतहैआन ५४ मुखसूखनहियधकधकीक म्पादिकअनुभाव ॥ श्यामबरणअरुदेवताकालकहत कबिराव ५५ ॥ भयथायीभावकोउदाहरण ॥ रावणकेहैंद शबदन औरबीसहैंबांह ॥ यहसुनिकैहियभयकछूभयो रामदलमांह ५६ ॥भयानकरसउदाहरण ॥ भभारिरामदल केभये बदनपीतज्योंधूप ॥ जबरावणकोऔचिका ल स्योडरावनरूप ५७ ॥ बीभत्सरस लक्षण ॥ परपोषकघि नकोसोई रसबीभत्सगनाइ ॥ घिनमेंबसतबिभावसे नि तउपजतहैआइ ५८ बिरचिनींदअरुथूकिबो मुखफेरन अनुभाव ॥ महाकालहैदेवता बरणनीलतेहिगाव ५९ घिनथायीभावको उदाहरण ॥ हरिसुमिरतहींराधिकारंगरू पगुणआनि ॥ सतभामाकछुमोरिमुख रहीग्वारिनीजा नि ६०॥ बीभत्सरस उदाहरण ॥ परधनरतसोआसुचिल लेकनउरलपटाइ ॥ श्यामनिहोरततिहुंतिया नाकसिकोर तिजाइ ६१ कहुंआमिषकहुंहाड़अरु कहूंचामदरशा त ॥ तिहिसदनाघरकीनबिधि हमेंबन्योहरिजात ६२ अद्भुत रसलक्षण ॥ परपोषकआश्चर्यजहँ अद्भुतरसव हिजानि॥नईबातकछुदेखिसुनि उपजतहैनितआनि ६३ बिनबूझेजोचाकिरहै वहैजानिअनुभाव ॥ पीतबरणअ

रुदेवता ब्रह्मचिन्तमैंलाव ६४ ॥ आश्चर्यथायीभावकोउदाहरण ॥ पूंछजारिकैपवनसुत दीसबलंकजराइ ॥ हियेराक्षसनकेदियो अचरजसोंधालाइ ६५ ॥ अद्भुतरसउदाहरण ॥ ल्याइसजीवनिमूरिजब ज्यायोलक्ष्मणफेरि ॥ सबराक्षसचक्रितभये यहिअचरजकोहेरि ६६ जोदलचाढ़िलंकागयो आयोरावणमारि ॥ सोलरिकैसरिकोकरै हैलरिकनसोंहारि ६७ प्रकटदेखियतजोसकल जगकेपोषनहार ॥ ठाढ़ेहाथपसारिकै मांगतबलिकेद्वार ६८ ॥ अथ शांतरसलक्षण ॥ परपोषकनिरवेदको शांतकहतहैसोइ ॥ उपजनियाकीगुरुकृपा देवकृपातेहोइ ६९ क्षमासन्तसुरपूजिबोयोगादिकअनुभाव ॥ श्रीनारायणदेवता चन्दबरणतेहिगाव ७० ॥ निर्बेदथायीभावकोलक्षण ॥ निजानन्दगुणगानलहि जगतेहोइउदास ॥ सोनिरबेदजोशांतको थायीहैपरकास ७१ ॥ निर्बेदथायीभावशांतकोउदाहरण ॥ जगआन्योजिहिभजनको अरुफिरिवासोंकाम ॥ रेमनसुमिरतहैनहीं एकोदिनतिहिनाम ७२ खिनहरिढूंढ़तआपसेखिनढूँढ़तअसमान ॥ घरकोभयोनघाटको ज्योंधोबीकोश्वान ७३ रेमनहाथनलगतकछु जगमेंलोभलगाइ ॥ ज्योंज्योंफटकैखोखरो त्योंत्योंउड़िउड़िजाइ ७४ रेमनअलिसमभरमकत खोवतदिवसनिकाम ॥ चरणकमलबिनुरामकेपैहैनाहिंबिश्राम ७५ ॥ शांतरसउदाहरण ॥ होतनकछुन्यारेभये अरुमिलिबैठेसाथ ॥ तिन्हैंभवनबनएकहै हैजिनकेमनहाथ ७६ सुखदुखबिनकोऊनहीयहनिश्चयजियजोइ ॥ दिनबीतेनिशिहोतहै निशिबीते

दिनहोइ ७७ लाभहानिकीबिधिदोऊ एकैचितठहराहिं॥
लहैनलखोहैकछू गयेपरेखोनाहिं ७८ प्रभुराचेतेत्र्प्रा
निकै यहगतिकरतिउदोत ॥ भोगयोगमेंहोतहै योगभो
गमेंहोत ७९ ॥ भावनकीसंधिउदयशांतसबलप्रौढ़ोक्तिबर्णनं॥
अथयेभावनकीसुनो संधिउदयअरुशांत ॥ औरसबैप्रौ
ढ़ोक्तियुति अपनीअपनीभांत ८० ॥ हर्षभाव शंकाभावकी
संधि ॥ बालमवारेसौतिके आवनगयेसुनाइ ॥ हरष
शंककेबीचतिय पैठीसीदरशाइ ८१ ॥ त्रासभावरोष
भावकीविधि ॥ इतप्रभुकीआज्ञानहीं उतरावणबलवान॥
त्रासरोषकेबीचही थकितभयोहनुमान ८२ ॥ ब्रीड़ा
भावप्रीतिभावकीविधि ॥ इतनिजकुलकीलाजउत मोहन
प्रीतिविचारि ॥ अतिनिशिनेमरुप्रेममधि सन्देहैरहै
नारि ८३ ॥ गर्ब भावोदय ॥ तुमजोहँसिवाबामको बें
दीदीन्हीराति ॥ शीशचढ़ायोसबनके चढ़ीशीशपैजा
ति ८४ ॥ मानभावकीशांतिउदय ॥ पियहँसिहूदेशीशजो
भयोगरबतियआइ ॥ सोकरजावकअरुणता देखत
मिट्योबनाइ ८५ ॥ अंतरिजभावोदयशांत ॥ अटादुरीमेंनिर
खिहरिकौंधाकीसीछांह ॥ चक्रितह्वैसमुझैबहुरिलाखिरा
धेकीबांह ८६ ॥ सबललक्षण ॥ मिटैयेनिजनिजआदिको
आवैभावजोअंत ॥ बिनुअंतरइककालमें सोईसबल
कहंत ८७ ॥ भावसबलकोउदाहरण ॥ सौकोकुलकीलाज
यहबहुरिदेखिबोताहि ॥ रेमनथिरह्वैकोधनी यहतिय
मिलिहैजाहि ८८ करतप्रथमतुकमेंद्वितिय कैउरशंक
बिशेखि ॥ तृतियमाहिंधृतचौथमें चिंताचितअवरे

खि ८९ ॥ धृतभावकीप्रोढ़ोक्ति ॥ प्रीतमबँसुरीकीसरस सब जगतेकरिध्यान ॥ अधरलगेहरिकेजियत बिछुरेबिछुरें प्रान ९० ॥ स्वकीयाविषयभावशंकाकीप्रौढ़ोक्ति ॥ बिछुरे पियस्वपनेनिरखि तियविदेशअनुमानि ॥ चौंकिपरी थहरीखरी पुरुषदूसरोजानि ९१ ॥ नेमकथनं ॥ सबै प्रछिन्नप्रकाशहै वहैप्रकटउदोत ॥ भूतभाविबर्त्तमान पुनिभयोहोइगोहोत ९२ सबविशेषसामान्यहै लक्षणसकलविशेखि ॥ होइकछूकुललक्षणते सोसमान्यअविरेखि ९३ जोरसउपजैआपसों सोसुनिसताजियजानि ॥ होइऔरकेहेतते सोपरानिसतबखानि ९४ कै लक्षणजहँपाइये तिनमेंअधिकजुहोइ ॥ ताहीकोयहकहतहैं यहबरणतकविलोइ ९५ एकऔरकीप्रीतिअरु तियआगेनरप्रीति ॥ अधमपूज्यसोप्रीतिअरु चोरीसों रसरीति ९६ हांसीगुरुजनसिरीअरु उत्तमबधुउत्साह॥ चोपबधनिमेंशोकपै रसाभाससबचाह ९७ भावनपूरणहैजहां भावाभासहैसोइ॥ कृष्णछांड़िकैप्रीतिज्यों और देशसोहोइ ९८ जैसेनायकनायका इनहूंकेआभास ॥ जेहिइनकीसीरीतिते औरोकहेंप्रकास ९९ पितुसुत बालकबालकाहिं बंधुबंधुसोंनेह ॥ पाईभावजहांदयाबातसल्यरसयेह ११०० ॥ रसजनितरसबर्णनं ॥ होतहास शृंगारते करुणारौद्रतेजान ॥ वीरजनितअद्भुतकह्योवीभत्सहतेभयान १ ॥ रसशत्रुबर्णनं ॥ रिपुविभत्सशृंगारको अरुभयरिपुरसवीर २ ॥ प्रस्तावक ॥ जोजैसो गुणकरतहै तैसोपावतभोग ॥ चषमुखकाजरकेउचित

अधरपानकेयोग ३ बड़ेचातुरनतेसखी बड़ेनपै यतभाग ॥ दृगनमीतकाजरभयो मांगतमीतसुहाग ४ रेमनतेरेजगतमें विधिकेहाथनिबाह ॥ दुखी मीनतनधरतहैं नितचुपरीकीचाह ५ मैंजबदेखोंमुरजलौं नीचनरनकीबात ॥ ज्योंज्योंमुखमेंमारिये त्यों त्योंबोलतजात ६ हैशत्रुनकेभिरतयों होतलघुनको चाव ॥ ज्योंकूकुरकूकुरलरे कौवापावतदाव ७ ॥ भ्रांतरसकोप्रस्तावक ॥ शशिनधरतनिजदेतसो रंगरूपपरवेष ॥ त्योंहींआपअवेषपुनि देतसबनकोवेष ८ यों आयोप्रभुजगतमें जबप्रभुजान्योनाहिं ॥ ज्योंरविको जानतनदिन रविआवतदिनमाहिं ९ फैलिरह्यो सबजगतमें देखसकतनहिंकोइ ॥ रबिदिखाइअधिरैनिकोसोअबभूठोहोइ १० ऐसीबिधिसबजगतमें प्रभुकीसदितलखाइ ॥ ज्योंदिनकरप्रतिबिंबगुण दर्पणदेतजनाइ ११ नापावतगुरुज्ञानते निगमअगमतेबात ॥ नारायंणकोनामलै पारायणह्वैजात १२ भलेबुरेसबरावरे सुनिलीजैयहनाथ ॥ रचेआपनेहाथसों लाजतिहारेहाथ १३ ॥ ग्रंथकीपूरणतावर्णनं ॥ पूरणकीन्होग्रंथमैं लैमुखप्रभुकोनाम ॥ जाप्रसादतेहोतहैं सकलजगतकेकाम १४ सुधरयोबरणबिगारहै कुमतिकुदूषणल्याइ ॥ ठौरठौरलखिरीझिहैं सुमतिसरसरसपाइ १५ · लिख्योंग्रन्थयहआगेहूँ लोकनकरिहितबुद्धि ॥ पैअबयासोंशोधिकै ताहिकीजियेशुद्धि १६ ग्यारहसैचौवनसकल हिजरीसंबत

पाइ ॥ सबग्यारहसैसत्रहै दोहाराखेल्याइ १११७

इतिश्रीहुसेनीवासतीबिलगिरामीसैयदबांकरसुतसैयद
गुलामनबीविरचितायांरसप्रबोधग्रन्थसमाप्तम् ॥

मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ानेमें छपो जनवरी सन् १८९० ई०

———